चौबीस ठाणा

बीसवीं शताब्दी के
प्रथम दिगम्बर
जैनाचार्य चारित्र-चक्रवर्ती
श्रीशान्तिसागर जी महाराज के
आचार्यपद प्रतिष्ठा शताब्दी महोत्सव
सन् २०२३-२०२४ के
उपलक्ष्य में उनके तृतीय पट्टाधीश
आचार्यशिरोमणि
श्रीधर्मसागर जी महाराज के लघु शिष्य
प्रज्ञाश्रमण मुनिश्री १०८ अमितसागर जी महाराज
की प्रेरणा से प्रकाशित

सम्पादन
प्रज्ञाश्रमण मुनि अमितसागर

प्रज्ञाश्रमण मुनि

कृति – चौबीस ठाणा
पुष्प संख्या - चौदहवाँ
सम्पादक - प्रज्ञाश्रमण मुनि अमितसागर
पावन प्रसङ्ग - बीसवीं शताब्दी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य चारित्र-चक्रवर्ती श्रीशान्तिसागर जी महाराज के आचार्यपद प्रतिष्ठा **शताब्दी महोत्सव** सन् २०२३-२०२४ के उपलक्ष्य में आचार्यशिरोमणि श्रीधर्मसागर जी महाराज के पट्ट शिष्य प्रज्ञाश्रमण मुनिश्री अमितसागर जी के ससंघ सान्निध्य में सन् २०२३ में प्रकाशित।

[पुस्तक प्राप्ति का स्थान]

१. चन्द्रा कॉपी हाऊस, हास्पिटल रोड, आगरा (उ०प्र०)
२. वास्ट जैन फाउण्डेशन ५९/२ बिरहाना रोड, कानपुर (उ०प्र०) मो०: ०९४५१८७५४४८
३. आलोक जैन, हनुमानगंज
   C/o श्री दिगम्बर जैन रत्नत्रय मन्दिर नसिया जी, कोटला रोड, फिरोजाबाद (उ०प्र०) मो०: ०९९९७५४३४१५
४. आचार्य श्रीशिवसागर ग्रन्थमाला, श्री शान्तिवीर नगर, श्रीमहावीर जी, जिला-करौली (राज०)
५. श्री दिगम्बर जैन अष्टापद तीर्थ, विलासपुर चौक, धारूहेड़ा, गुडगाँव (हरि०) मो०: ०९३१२८३७२४०
६. प्राचीन आर्षग्रन्थालय, जैन बाग, सहारनपुर (उ०प्र०) मो०: ०९४१०८७४७०३
७. विशुद्ध ग्रन्थालय, सर्वऋतु विलास, उदयपुर (राज०)
८. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कटरा सेवा कली, नया शहर, इटावा (उ०प्र०)

I.S.B.N. 81-87280-26
संशोधित संस्करण - पाँचवाँ; सन् २०२३,
प्रतियाँ - २०००
मूल्य - ५०₹ — प्रतिदिन पाठ उच्चारण
मुद्रक - महेन्द्रा पब्लिकेशन (प्रा० लि०) ई – ४२,४३,४४ सेक्टर ७, नोएडा (उ०प्र०)

प्रकाशकीय

गुरुदेव कहा करते हैं कि दर्पण और दीपक कभी झूठ नहीं बोलते हैं। जलते हुए दीपक को कहीं भी ले जा सकते हैं, किन्तु अँधेरे को कहीं नहीं ले जा सकते हैं।

जैन धर्म का आगम - सिध्दान्त; दर्पण एवं जलते हुए दीपक की तरह है। नकटे या कुरूप को दर्पण दिखाने से उसके कषाय उत्पन्न होती है। चोर-व्यभिचारी-व्यसनी को रोशनी का भय सताता है।

अज्ञानी; ज्ञान-दीपक का सामना नहीं कर सकता है। व्यसनी; दर्पण की झलक को सहन नहीं कर पाता है।

दर्पण; आदर्श को कहते हैं। दर्प जिसमें नहीं हो वह दर्पण है। दर्पण में देखने सब ललकते हैं, किन्तु दर्पण किसी को देखने नहीं ललकता; यही तो उसका आदर्श है।

दर्पण और दीपक को डराने-धमकाने वाले पत्थर और आँधियाँ हैं। जो दर्पण; पत्थर से नहीं डरता वही दर्पण है। जो दीपक; आँधियों से नहीं घबड़ाता वही दीपक है।

हम अपनी बात इन्हीं दो पूर्ण सत्यों के साथ प्रारम्भ करते हैं। पूज्य गुरुदेव से फिरोजाबाद जनपद की जनता; सन् १९९२ से परिचित है। परिचित है उनके दर्पणवत् स्वभाव से; धनिक-निर्धन, पूजक-निन्दक दोनों समान। परिचित है उनके दीपकवत् साहस से। वो कभी अपना परिचय स्वयं इस अन्दाज में देते हैं —

आँधियों के बीच जो जलता हुआ मिल जाएगा।
उस दिये से पूछना मेरा पता मिल जाएगा॥
अय! आँधियों अपनी औकात में रहो।
हम तो जलते हुए दिये हैं जलते ही रहेंगे॥

देख चिरागों के शोले मञ्जिल से इशारा करते हैं।
तू हिम्मत हारा जाता है कहीं हिम्मत हारा करते हैं ?

हम जनपदवासी; सन् १९९२ से इस जलते हुए दीपक को देख रहे हैं जो व्यक्ति, परिवार, समाज, गाँव, शहर, राज्य, राष्ट्र एवं विश्व के लिए, अपने प्रकाश से मार्गदर्शन कर रहा है।

इस जलते हुए दीपक को; कितनी आँधियों - तूफानों ने बुझाने की कोशिश की, लेकिन यह दीपक बुझने की जगह और भी अधिक प्रकाशमान हो गया और अँधी-आँधियाँ; हार मानकर बैठ गईं।

इस दर्पण को; कितने ही छोटे-छोटे कङ्कण ही नहीं; पहाड़ जैसे पत्थर भी धमकी देते रहे, लेकिन दर्पण; दर्पण ही रहा, उन बेजान पत्थरों के सामने समर्पण नहीं हुआ।

बस; इन्हीं दो उपमाओं में ही इस व्यक्ति का व्यक्तित्व समाया है। ख्याति-पूजा-लाभ से दूर, दूरदर्शन के प्रदर्शन एवं पोस्टरों के पोस्ट की परछाइयों से विलग, अनेक उपाधियों और पद-प्रतिष्ठा की होड़ से उदासीन।

एक वैज्ञानिक की तरह वस्तु-तत्त्व की तह में जाकर उसे समझना जिनके स्वभाव में है। बड़े-बड़े ग्रन्थों के रहस्यों को सरलता से; **स्वरूप भेद और स्वामी भेद की कुञ्जी से; आगम, युक्ति, गुरूपदेश एवं स्वानुभव से सिद्ध करना उनका लक्ष्य रहता है।**

वैसे तो इतिहास में कोई भी आचार्य - गुरुजन अपना भौतिक परिचय लिखकर नहीं गए, किन्तु उनके जीवन्त कृत्य ही उनके अमर परिचय हो गए। गुरु जी कहा करते हैं कि —

अच्छे कार्य स्वयं में प्रशंसनीय हुआ करते हैं, अतः हमें कभी; दूसरों से प्रशंसा की अपेक्षा नहीं रखना चाहिए।

फिर भी हम भक्त-श्रद्धालुजन अपने इष्ट की आराधना-स्तुति करके पुण्योपार्जन कर लेते हैं, यह एक उद्देश्य है। दूसरा उद्देश्य; सब कोई उनके बारे में; उनके परिचय से सही परिचित हों प्रत्यक्ष और परोक्षरूप से, अतः इस उद्देश्य से उनका परिचय भी देना अनिवार्य है।

आप में देखा है हम सबने; कुन्दकुन्दाचार्य का अध्यात्म और उनके जैसा धर्मायतनों को बिना हिंसा के बचाने वाला **"बलात्कारगण",** मैनपुरी एवं फिरोजाबाद इनके उदाहरण हैं।

समन्तभद्राचार्य जैसा शास्त्रार्थ करने का अदम्य साहस एवं फिरोजाबाद जिले के चन्द्रवाड़ के किले में मूर्तियाँ प्रगटाने वाला गौरव पूर्ण अतिशय इसका प्रमाण है।

पूज्यपादाचार्य जैसी आगमोक्त लक्षणावली आप में हैं, क्योंकि आप पूज्यपादाचार्य एवं समन्तभद्राचार्य के आगम को सिराहने रखकर सोते हैं, अनुत्तर जिज्ञासा टीका इसका जीवन्त प्रतीक है।

अकलङ्काचार्य जैसे प्रमाणों की प्रचुरता; उनकी वाणी एवं लेखनी में विराजमान रहती है। आप कहते हैं, एक दर्पण को देखने; दूसरे दर्पण की जरूरत नहीं होती है, अतः एक प्रमाण के लिए दूसरे प्रमाण की जरूरत नहीं होती है। **जिसको जिनवाणी-आगम-सिद्धान्त में ही श्रद्धा नहीं है, उसे कितने ही आगम-सिद्धान्त दिखला दो; मानने वाला नहीं है।**

मानतुङ्गाचार्य जैसी ताले टूटने वाली आश्चर्यकारी घटनाओं से फिरोजाबाद जनपद अनजान नहीं है। वादिराज मुनिराज जैसी आस्था से असाध्य रोग से मुक्ति के चमत्कारी दृश्य जिनके स्वयं पैदा हो गए।

जिनसेनाचार्य जैसे निर्विकार-अनासक्त भाव; जो कर्त्ता में अकर्त्ता, भोक्ता में अभोक्ता की अनुभूति कराते हैं ।

अमृतचन्द्राचार्य जैसे निर्नाम निर्माण— कहीं-किसी भी जगह अपने व्यक्तिगत नाम के कोई आश्रम-मठ-मन्दिर, संस्थान आदि नहीं बनवाए । आप कहते हैं कि ——

जिस खुदा ने ये दुनिया बनाई, उसने अपनी फोटो नहीं छपाई ।

आपका हमेशा शिक्षा एवं चिकित्सा पर जोर रहता है । शिक्षा चाहे लौकिक हो या पारलौकिक; सभी को प्रोत्साहन देते हैं। छोटे बच्चों से पढ़ाई के लिए पूछते हैं कि तुम्हें क्या बनना है ? **"कुर्सी विछाने वाला चपरासी या कुर्सी पर बैठने वाला ऑफीसर। बड़े बच्चों को कहते हैं कि तुम्हारी चार साल की पढ़ाई का जीवन; तुम्हारे चालीस साल बना देगा, फालतु वातावरण से बचो ।"**

बालकों से लगाव, युवाओं को प्रेरणा, वृध्दों की सेवा-वैय्यावृत्ति, समाधिस्थों की साधना में आपका निर्यापकाचारित्व अनुभूत आदर्श है ।

आपकी प्रथम प्रकाशित कृति मन्दिर है जो अद्यावधि हिन्दी, मराठी, गुजराती, कन्नड़ एवं अंग्रेजी संस्करणों में; लगभग दो लाख प्रतियों से भी अधिक प्रकाशित हो चुकी हैं।

आपने बाल साहित्य के रूप में बालगीत, बाल कहानियाँ, जैन चित्र कथायें, बाल विज्ञान के क्रमशः पाँच भाग, आसान उच्चारण, सरल उच्चारण, अनुपम पाठसंग्रह, रयणसार, द्रव्य संग्रह द्वारा मूलपाठों को उच्चारण-पढ़ने योग्य बनाया है।

इसी के साथ कई ग्रन्थों के प्रकाशन की प्रेरणा दी; जिनमें धर्मपरीक्षा, सम्यक्त्व कौमुदी, दानशासन, दान चिन्तामणि, धर्मध्वज

विशेषाङ्क, भक्तामर शतद्वयी, सिरिभूवलय, नाममाला, चौबीस ठाणा, गुरु-शिष्य दर्पण, बृहत्स्वयम्भूस्तोत्र, श्री सिद्धचक्र विधान-कवि सन्तलाल जी, जैन-अभिषेक पाठ संग्रह, चौंतीस स्थान दर्शन आदि कृतियाँ कुछ प्रकाशित हैं, कुछ प्रकाशकाधीन हैं।

प्रवचन सङ्कलन में; आँखिन देखी आत्मा — इसमें उत्तमक्षमादि दशधर्मों के स्वरूप को, आगमिक, वैज्ञानिक आदि के आधार पर विवेचित किया गया है। दशलक्षण पर्वों में विद्वानों द्वारा इसका प्रयोग किया जाता है।

अन्तरङ्ग के रङ्ग — इसमें षट्लेश्या का वर्णन किया गया है। आप अपने परिणामों का स्वयं निरीक्षण करें। अपने भावों के अच्छे-बुरे की पहचान होती है।

अनुत्तर यात्रा — सोलह कारण भावनाओं का औपन्यासिक विश्लेषण है कि साधारण-सी आत्मा त्रैलोक्य पूज्य तीर्थङ्कर पद तक कैसे पहुँचती है? कई संस्करणों में प्रकाशित हो चुके हैं।

नीतिशास्त्र; कुरल काव्य कृति — उन नीतियों का संग्रह है जो दो हजार वर्ष पहले कुन्दकुन्दाचार्य ने सर्वजनहिताय-सर्वजनसुखाय संकलित की थीं। जिनकी आज; व्यक्ति, परिवार, समाज, राज्य एवं राष्ट्र के कर्त्तव्यों के प्रति जागरुक करने की परम आवश्यकता है। इसका सम्पादन किया जो प्रभात प्रकाशन दिल्ली से २०१० में प्रकाशित हुआ।

आपकी "बोलती माटी" महाकाव्य कृति — सरलतम भाषा की एक ऐसी अभिव्यक्ति है, जिसमें एक अकिञ्चन्य माटी को पात्र बनाकर, मद से भरे पात्रों को निर्मद बना दिया। तुच्छ से उच्च बनाने की शिक्षा देने वाली कृति; आज नहीं तो कल इसकी आवश्यकता अवश्य होगी। इसका प्रथम संस्करण; एक बार लगभग बीस वर्ष पूर्व

सन् १९९५ में प्रकाशित हो चुका है, किन्तु पुनः इसका संशोधित-संस्करण सन् २०१८ में प्रकाशित हो चुका है।

अमृतचन्द्राचार्य कृत तत्त्वार्थसार कृति — आपके द्वारा सम्पादित आगम की प्रथम कृति है, जिसका श्रीधर्मश्रुत ज्ञान, हिन्दी टीका के रूप में सम्पादन; सन् २०10 में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित किया गया।

आज हमें यह परम सौभाग्य प्राप्त हो रहा है कि हम पूज्य मुनिश्री के द्वारा सम्पादित **चौबीस ठाणा** कृति का संशोधित **चौदहवाँ पुष्प** के रूप में प्रकाशन कर रहे हैं।

गुरुदेव के द्वारा संकलित, रचित, सम्पादित साहित्य में मुनिश्री की अयाचित वृत्ति से; दान-दाता उदार मन से स्वेच्छया राशि से सहयोग करते हैं, उन दानी महानुभावों के हम आभारी हैं।

मुनिश्री द्वारा निर्देशित श्रीधर्मश्रुत शोध संस्थान, श्री दिगम्बर जैन रत्नत्रय मन्दिर, नसिया जी, कोटला रोड, फिरोजाबाद (उ०प्र०)। जिसमें प्राचीन-हस्तलिखित हजारों पाण्डुलिपियाँ एवं प्राचीन-अर्वाचीन प्रकाशित-उपलब्ध-अनुपलब्ध ग्रन्थ भण्डार में जैनधर्म पर शोध करने वालों के लिए उपलब्ध रहे एवं प्राचीन साहित्य-आगम-सिद्धान्त का संरक्षण-संवर्द्धन हो। इसके लिए सकल जैन समाज मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं।

निवेदक

श्रीधर्मश्रुत शोध संस्थान, श्रीदिगम्बर जैन रत्नत्रय मन्दिर,
नसिया जी परिसर, कोटला रोड, फिरोजाबाद (उ०प्र०)

सम्पादकीय

चौबीस ठाणा कृति; करणानुयोग के विषय में प्रवेश करने वाले जिज्ञासुजनों के लिये एक महत्त्वपूर्ण कृति है। खासकर आज के प्रतियोगितावादी युग में धर्मज्ञान की अभिवृद्धि के लिये उत्तम साधन है। चौबीस ठाणा पुस्तक पढ़ने के लिए सबसे पहले चौबीस स्थानों के नाम एवं उनके उत्तर भेदों को अच्छी तरह से याद कर लें।

प्रश्नः - गति किसे कहते हैं ?

उत्तरः- गति नामकर्म के उदय से प्राप्त होने वाली जीव की अवस्था विशेष को गति कहते हैं।

प्रश्नः - इन्द्रिय किसे कहते हैं ?

उत्तरः- आत्मा के चिह्न विशेष को इन्द्रिय कहते हैं अथवा जिन एकेन्द्रियादि जाति नामकर्म के उदय से जीव की जो एकेन्द्रिय आदि अवस्था होती है, उसे इन्द्रिय कहते हैं।

प्रश्नः - काय किसे कहते हैं ?

उत्तरः- जाति नामकर्म के अविनाभावी त्रस और स्थावर नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की पर्याय विशेष को काय कहते हैं।

प्रश्नः - योग किसे कहते हैं ?

उत्तरः- पुद्‌गलविपाकी शरीर नामकर्म के उदय से मन-वचन-काय से युक्त जीव की कर्मग्रहण में कारणभूत शक्ति को योग अर्थात् भावयोग कहते हैं। इस शक्ति के कारण आत्मप्रदेशों में जो परिस्पन्दन उत्पन्न होता है, उसे द्रव्ययोग कहते हैं।

प्रश्नः - वेद किसे कहते हैं ?

उत्तरः- वेद-नोकषाय के उदय तथा उदीरणा से होने वाले जीव के भाव को वेद कहते हैं।

प्रश्नः - कषाय किसे कहते हैं ?

उत्तरः- जो जीव के कर्मरूपी खेत का कर्षण करती है, उसे कषाय कहते हैं।

प्रश्नः - ज्ञान किसे कहते हैं ?

उत्तरः- जिसके द्वारा जीव त्रिकालवर्ती समस्त द्रव्य, उनके गुण और उनकी पर्यायों को प्रत्यक्षरूप से जानते हैं, उसे ज्ञान कहते हैं।

प्रश्नः - संयम किसे कहते हैं ?

उत्तरः- अहिंसा आदि महाव्रतों का धारण करना, ईर्या आदि समितियों का पालन करना, क्रोध आदि कषायों का निग्रह करना, मन-वचन-काय की प्रवृत्तिरूप दण्डों का त्याग करना और स्पर्शन आदि इन्द्रिय के विषयों को जीतना संयम कहलाता है।

प्रश्नः - दर्शन किसे कहते हैं ?

उत्तरः- सामान्य-विशेषात्मक पदार्थ के विशेष अंश को ग्रहण न कर, केवल सामान्य अंश का जो निर्विकल्प ग्रहण होता है, उसे दर्शन करते हैं।

प्रश्नः - भव्य-अभव्य किसे कहते हैं ?

उत्तरः- जिस जीव में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक् चारित्र प्रगट करने की योग्यता होती है, उसे भव्य कहते हैं। इसके विपरीत अभव्य कहलाता है।

प्रश्नः - सम्यक्त्व किसे कहते हैं ?

उत्तर:- जिनेन्द्र भगवान के द्वारा कहे गये; छह द्रव्य, पाँच अस्तिकाय और नौ पदार्थों के श्रद्धान करने को सम्यक्त्व कहते हैं।

प्रश्नः - संज्ञी किसे कहते हैं?

उत्तर:- जो जीव मन की सहायता से; शिक्षा, आलाप, उपदेश आदि ग्रहण कर सकता है, उसे संज्ञी कहते हैं।

प्रश्नः - आहारक किसे कहते हैं?

उत्तर:- औदारिकादि तीन शरीर और छह पर्याप्तियों के योग्य नोकर्म पुद्गलवर्गणाओं को जो जीव ग्रहण करते हैं उन्हें आहारक कहते हैं।

प्रश्नः - गुणस्थान किसे कहते हैं ?

उत्तर:- मोह और योग के निमित्त से उत्पन्न होने वाली, आत्म-परिणामों की तारतम्यता को गुणस्थान कहते हैं।

प्रश्नः - जीवसमास किसे कहते हैं?

उत्तर:- जिनके द्वारा अथवा जिनमें सब संसारी जीवों का संग्रह किया जाता है, उन्हें जीवसमास कहते हैं।

प्रश्नः - पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर:- आहारवर्गणा, भाषावर्गणा और मनोवर्गणा के परमाणुओं को शरीर आदि रूप परिणमाने की जीव की शक्ति की पूर्णता को पर्याप्ति कहते हैं। विशेष यह है कि आहारवर्गणा के परमाणु; तीन शरीर एवं श्वासोच्छ्वास रूप परिणमित होते हैं।

प्रश्नः - प्राण किसे कहते हैं एवं उसके कितने भेद हैं?

उत्तर:- जिनके संयोग से यह जीव; जीवन अवस्था को और वियोग से मरण अवस्था को प्राप्त होता है, उन्हें प्राण कहते हैं। इसके दस भेद होते हैं।

प्रश्नः - संज्ञा किसे कहते हैं ?

उत्तरः- जिनसे संक्लेशित होकर जीव; इस भव में दारुण दुःखों को भोगते हैं, उन्हें संज्ञा कहते हैं अथवा आहारादि विषयों की अभिलाषा को संज्ञा कहते हैं ?

प्रश्नः - उपयोग किसे कहते हैं ?

उत्तरः- चैतन्य अनुविधायी आत्मा के परिणाम को उपयोग कहते हैं।

प्रश्नः - ध्यान किसे कहते हैं ?

उत्तरः- उत्तम संहनन वाले जीव का; एक विषय में चित्तवृत्ति का रोकना ध्यान है, जो अन्तर्मुहूर्त्त काल तक होता है। चित्त के विक्षेप का त्याग करना ध्यान है अर्थात् मन का इधर-उधर, जाना-आना रोकना ध्यान है।

प्रश्नः - आस्त्रव किसे कहते हैं ?

उत्तरः- कर्मों के आने के द्वार को आस्त्रव कहते हैं।

प्रश्नः - जाति किसे कहते हैं ? जाति के कितने भेद हैं ?

उत्तरः- यहाँ जाति से योनि को ग्रहण किया है। जीवों के उत्पत्ति स्थानों को योनि कहते हैं। योनि के ८४ लाख भेद हैं।

प्रश्नः - कुल किसे कहते हैं ? कुल के कितने भेद हैं ?

उत्तरः- शरीर-भेद के कारणभूत नोकर्मवर्गणाओं के भेद को कुल कहते हैं। समस्त कुल १९९॥ लाख करोड़ हैं।उसके बाद क्रमशः नरक गति आदि मार्गणाओं में चौबीस स्थानों के साथ कौन-कौनसी गति, इन्द्रिय, काय आदि के इतने-इतने भेद क्यों होते हैं एवं जो भेद उस मार्गणा में नहीं होते; वे क्यों नहीं होते हैं ?

जैसे - १.गति मार्गणा में चारों गतियों में से पहली एक नरक गति है, क्योंकि नरक गति में अन्य तीन गतियाँ नहीं होती हैं। २.इन्द्रिय मार्गणा में पाँचों इन्द्रियों में से नारकी जीव एक पञ्चेन्द्रिय ही होते हैं, अतः नारकियों में एक, दो, तीन, चार इन्द्रिय जीव नहीं होते हैं। ३.काय मार्गणा में छह कायों में से नारकियों में एक त्रस काय ही होती है, क्योंकि वे नारकी पञ्चेन्द्रिय ही होते हैं। ४.योग मार्गणा में पन्द्रह योगों में से ग्यारह योग होते हैं, चार मन के, चार वचन के, तीन काय के वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र एवं एक कार्मणकाय योग होता है। नारकियों में औदारिक, औदारिक मिश्र, आहारक, आहारक मिश्र; ये चार काययोग नहीं होते हैं। ५. वेद मार्गणा में तीन वेदों में से नारकियों में एक नपुंसक वेद ही होता है, स्त्री एवं पुरुष वेद नहीं होते हैं। ६.कषाय मार्गणा के पच्चीस भेदों में से नारकियों में स्त्री एवं पुरुष वेद की दो कषाय कम करने से तेईस कषाय होती हैं। ७.ज्ञान मार्गणा के आठ भेदों में से मनःपर्ययज्ञान एवं केवलज्ञान कम करने से ज्ञान के छह भेद नारकियों के होते हैं। ८.संयम मार्गणा के सात भेदों में से नारकियों के एक असंयम ही होता है, क्योंकि नारकियों के कोई भी संयम नहीं होता है। ९.दर्शन मार्गणा के चार भेदों में से तीन दर्शन होते हैं, क्योंकि नारकियों के केवलदर्शन नहीं होता है। १०.लेश्या मार्गणा के छह भेदों में से तीन अशुभ लेश्या ही नारकियों के होती हैं। ११.भव्य मार्गणा के दो भेदों में से दोनों ही भेद नारकियों के

होते हैं। १२. सम्यक्त्व मार्गणा के छह भेदों में से छहों भेद नारकियों के हो सकते हैं। १३. संज्ञित्व मार्गणा के दो भेदों में से एक संज्ञित्व मार्गणा ही नारकियों के होती है, क्योंकि नारकी जीव कभी असैनी नहीं होते हैं। १४. आहारक मार्गणा के दो भेदों में से दोनों ही भेद नारकियों के होते हैं। १५. गुणस्थान के चौदह भेदों में से नारकियों के प्रारम्भ के चार ही गुणस्थान होते हैं, क्योंकि आगे के गुणस्थानों में संयम होता है, किन्तु नारकी असंयमी होते हैं। १६. जीवसमास के उन्नीस भेदों में से नारकियों के एक संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवसमास ही होता है। १७. पर्याप्ति के छह भेदों में से छहों भेद नारकियों में पाए जाते हैं। १८. प्राणों के दस भेदों में से नारकियों के दसों प्राण पाए जाते हैं। १९. संज्ञा के चारों भेदों में से चारों संज्ञाएँ नारकियों के पाई जाती हैं। २०. उपयोग के बारह भेदों में से छह ज्ञान एवं तीन दर्शन; ऐसे नौ उपयोग के भेद नारकियों में पाए जाते हैं। २१. ध्यान के सोलह भेदों में से चार आर्त्तध्यान, चार रौद्रध्यान एवं एक धर्मध्यान; ऐसे कुल नौ ध्यान नारकियों में पाए जाते हैं। २२. आस्रव के सत्तावन भेदों में से स्त्री एवं पुरुष वेद की दो कषाय, चार योग कम करने से कुल इक्यावन आस्रव नारकियों में होते हैं। २३. जाति के चौरासी लाख भेदों में से नारकियों की केवल चार लाख जाति होती हैं। २४. कुल के एक-सौ साढ़े निन्यानवे लाख कुलकोडि में से पच्चीस लाख कोडि कुल नारकियों के होते हैं।

इस प्रकार नरक गति के चौबीस स्थानों में क्या-क्या होता है और क्या-क्या नहीं होता है, दर्शाया गया है। ठीक इसी प्रकार मनुष्यगति आदि तीन गतियों में; इन्द्रिय आदि मार्गणाओं को यथा स्थान लगाना चाहिये।

हमारी भावना

बीसवीं शताब्दी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्रीशान्तिसागर जी महाराज के तृतीय पट्टाधीश आचार्य शिरोमणि श्रीधर्मसागर जी महाराज के पट्ट शिष्य प्रज्ञाश्रमण बालयोगी मुनिश्री अमितसागर जी महाराज निरन्तर अध्ययन में लगे रहते हैं, आपकी इच्छा रहती है कि हर शहरों-गाँवों में शिविरों के माध्यम से बच्चों में भी धर्म रुचि बनें, इसी लक्ष्य को रखकर इस चौबीस ठाणा कृति को मुनिश्री द्वारा संशोधन कर श्रीधर्मश्रुत शोध संस्थान द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है। हम मुनिश्री के, प्रकाशक एवं दान दाताओं के आभारी हैं, जिन्होंने ज्ञानयज्ञ में आहुति देकर पुण्योपार्जन किया।

संयोजक

वास्ट जैन फाउण्डेशन ५९/२

बिरहाना रोड कानपुर (उ०प्र०)

ॐ

नमः सिद्धेभ्यः

चौबीस ठाणा चर्चा

गाथा

गइ इंदिये च काये, जोये वेये कषाय णाणे य ।
संजम दंसण लेस्सा, भविया सम्मत्त सण्णि आहारे ॥
गुण जीवा पज्जत्ती, पाणा सण्णा य मग्गणा-ओय ।
उवओगो वि य कमसो, बीसं तु परूवणा भणिया ॥
झाणा वि य पच्चा वि य, जाइ य कुल-कोडि संजुया सव्वे ।
गह्लाति जेण भणिया, कमेण चउबीस ठाणाणि ॥

चौबीस ठाणा (स्थानों) के नाम

१.	गति	१३.	संज्ञित्व (सैनी)
२.	इन्द्रिय	१४.	आहारक
३.	काय	१५.	गुणस्थान
४.	योग	१६.	जीवसमास
५.	वेद	१७.	पर्याप्ति
६.	कषाय	१८.	प्राण
७.	ज्ञान	१९.	संज्ञा
८.	संयम	२०.	उपयोग
९.	दर्शन	२१.	ध्यान
१०.	लेश्या	२२.	आस्त्रव
११.	भव्यत्व	२३.	जाति
१२.	सम्यक्त्व	२४.	कुल

चौबीस ठाणा (स्थानों) के उत्तर भेद

१. गति (४)

१. नरकगति; २. तिर्यञ्चगति; ३. मनुष्यगति; ४. देवगति ।

२. इन्द्रिय (५)

१. एक इन्द्रिय; २. दो इन्द्रिय; ३. तीन इन्द्रिय;
४. चार इन्द्रिय; ५. पाँच इन्द्रिय ।

३. काय (६)

१. पृथ्वीकाय; २. जलकाय; ३. अग्निकाय; ४. वायुकाय;
५. वनस्पतिकाय; ६. त्रसकाय ।

४. योग (१५)

मनोयोग ४ - १. सत्य मनोयोग; २. असत्य मनोयोग; ३. उभय मनोयोग; ४. अनुभय मनोयोग ।

वचनयोग ४ - १. सत्य वचनयोग; २. असत्य वचनयोग; ३. उभय वचनयोग; ४. अनुभय वचनयोग ।

काययोग ७ - १. औदारिक काययोग; २. औदारिकमिश्र-काययोग; ३. वैक्रियिक काययोग; ४. वैक्रियिकमिश्र-काययोग; ५. आहारक काययोग; ६. आहारकमिश्र-काययोग; ७. कार्मण काययोग ।

५. वेद (३)

१. स्त्री वेद; २. पुरुष वेद; ३. नपुसंक वेद ।

६. कषाय (२५)

अनन्तानुबन्धी ४ - १. क्रोध; २. मान; ३. माया; ४. लोभ ।

अप्रत्याख्यान ४ - १. क्रोध; २. मान; ३. माया; ४. लोभ ।

प्रत्याख्यान ४ - १. क्रोध; २. मान; ३. माया; ४. लोभ ।
संज्वलन ४ - १. क्रोध; २. मान; ३. माया; ४. लोभ ।
अकषाय ९ - १. हास्य; २. रति; ३. अरति; ४. शोक; ५. भय; ६. जुगुप्सा; ७. स्त्रीवेद; ८. पुरुषवेद; ९. नपुंसकवेद ।

७. ज्ञान (८)

१. कुमतिज्ञान; २. कुश्रुतज्ञान; ३. कुअवधिज्ञान; ४. सुमतिज्ञान; ५. सुश्रुतज्ञान; ६. सुअवधिज्ञान; ७. मनःपर्ययज्ञान; ८. केवलज्ञान ।

८. संयम (७)

१. असंयम; २. संयमासंयम; ३. सामायिक; ४. छेदोपस्थापना; ५. परिहारविशुद्धि; ६. सूक्ष्मसाम्पराय; ७. यथाख्यात ।

९. दर्शन (४)

१. चक्षुदर्शन; २. अचक्षुदर्शन; ३. अवधिदर्शन; ४. केवलदर्शन ।

१०. लेश्या (६)

१. कृष्ण लेश्या; २. नील लेश्या; ३. कापोत लेश्या; ४. पीतलेश्या; ५. पद्म लेश्या; ६. शुक्ललेश्या ।

११. भव्य (२)

१. भव्यत्व; २. अभव्यत्व ।

१२. सम्यक्त्व (६)

१. मिथ्यात्व; २. सासादन; ३. मिश्र; ४. उपशम; ५. वेदक अर्थात् क्षयोपशम; ६. क्षायिक ।

१३. संज्ञित्व (सैनी) (२)

१. संज्ञित्व; २. असंज्ञित्व ।

१४. आहारक (२)

१. आहारक; २. अनाहारक ।

१५. गुणस्थान (१४)

१. मिथ्यात्व; २. सासादन; ३. मिश्र; ४. अविरत; ५. देशव्रत; ६. प्रमत्त; ७. अप्रमत्त; ८. अपूर्वकरण; ९. अनिवृत्तिकरण; १०. सूक्ष्मसाम्पराय; ११. उपशान्तमोह; १२. क्षीणमोह; १३. सयोगकेवली; १४. अयोगकेवली ।

१६. जीवसमास (१९)

२ पृथ्वीकाय सूक्ष्म, बादर; २ जलकाय सूक्ष्म, बादर;
२ अग्निकाय सूक्ष्म, बादर; २ वायुकाय सूक्ष्म, बादर;
२ नित्यनिगोद सूक्ष्म, बादर; २ इतरनिगोद सूक्ष्म, बादर;
१ सप्रतिष्ठित प्रत्येक; १ अप्रतिष्ठित प्रत्येक;
१ दो इन्द्रिय जीव बादर; १ तीन इन्द्रिय जीव बादर;
१ चार इन्द्रिय जीव बादर; १ असैनी पञ्चेन्द्रिय जीव बादर;
१ सैनी पञ्चेन्द्रिय जीव बादर ।

१७. पर्याप्ति (६)

१. आहार; २. शरीर; ३. इन्द्रिय; ४. श्वासोच्छ्वास; ५. भाषा; ६. मन ।

१८. प्राण (१०)

५ इन्द्रिय प्राण; १ मनोबल प्राण; १ वचनबल प्राण; १ कायबल प्राण; १ श्वासोच्छ्वास प्राण; १ आयु प्राण ।

१९. संज्ञा (४)

१. आहार संज्ञा; २. भय संज्ञा; ३. मैथुन संज्ञा; ४. परिग्रह संज्ञा ।

२०.उपयोग (१२)

८ ज्ञानोपयोग; ४ दर्शनोपयोग।

२१. ध्यान (१६)

आर्त्तध्यान ४ - १. इष्ट वियोगज; २.अनिष्टसंयोगज; ३.पीड़ा चिन्तन; ४.निदानबन्ध।

रौद्रध्यान ४ - १. हिंसानन्द; २.मृषानन्द; ३.चौर्यानन्द; ४.परिग्रहानन्द।

धर्मध्यान ४ - १.आज्ञाविचय; २.अपायविचय; ३.विपाकविचय; ४.संस्थानविचय।

शुक्लध्यान ४ - १.पृथक्त्ववितर्क; २.एकत्ववितर्क; ३.सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति; ४.व्युपरतक्रियानिर्वृत्ति।

२२ - आस्त्रव (५७)

मिथ्यात्व ५ - १.एकान्त मिथ्यात्व; २.विनय मिथ्यात्व; ३.विपरीत मिथ्यात्व; ४.संशय मिथ्यात्व; ५.अज्ञान मिथ्यात्व।

अव्रत १२ - ६ षट्काय रक्षा नहीं; ५ इन्द्रिय वश नहीं; १ मन वश नहीं।

कषाय २५ - पूर्वोक्त।

योग १५ - पूर्वोक्त।

२३.जाति (८४ लाख)

७ लाख पृथ्वीकाय; ७ लाख जलकाय;
७ लाख अग्निकाय; ७ लाख वायुकाय;
७ लाख नित्य निगोद; ७ लाख इतर निगोद;

१० लाख वनस्पतिकाय;	२ लाख दो इन्द्रिय;
२ लाख तीन इन्द्रिय;	२ लाख चार इन्द्रिय;
४ लाख पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च;	४ लाख नारक;
४ लाख देव;	१४ लाख मनुष्य ।

२४ - कुल (१९९ ।। लाख कोटि)

२२ लाख कोटि पृथ्वीकाय;	७ लाख कोटि जलकाय;
३ लाख कोटि अग्निकाय;	७ लाख कोटि वायुकाय;
२८ लाख कोटि वनस्पतिकाय;	७ लाख कोटि दो इन्द्रिय;
८ लाख कोटि तीन इन्द्रिय;	९ लाख कोटि चार इन्द्रिय;
१२ ।। लाख कोटि जलचर;	१२ लाख कोटि नभचर;
१९ लाख कोटि थलचर;	२६ लाख कोटि देव;
२५ लाख कोटि नारकी;	१४ लाख कोटि मनुष्य ।

कुल योग = १९९ ।। लाख करोड़

नोट - योनियों वा कुलों का विशद वर्णन गोम्मटसार जीवकाण्ड गाथा ८९ वा ११३ में देखा जावे ।

मातृ पक्ष को जाति (योनि) एवं पितृ पक्ष को कुल कहते हैं। डाई या फार्मा योनि है एवं उसमें डलने-ढलने वाला द्रव्य कुल है। भोगभूमि में क्षायिक सम्यक्त्व वाले जलचर तिर्यञ्च में १२।। लाख कोटि कुल नहीं होते हैं।

नरकगति में २४ स्थान

१ गति	नरक
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
११ योग	मन ४, वचन ४, वैक्रियिक द्विक, १ कार्मण
१ वेद	नपुंसक
२३ कषाय	स्त्री, पुरुष वेद बिना
६ ज्ञान	सुज्ञान ३, कुज्ञान ३
१ संयम	असंयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	सब
४ गुणस्थान	१,२,३,४ तक
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
९ उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
९ ध्यान	४ आर्त्त, ४ रौद्र, १ धर्म
५१ आस्रव	स्त्री १, पु० १, औ० २, आ० २ बिना
४ लक्ष जाति	नरक सम्बन्धी
२५ ल० को० कुल	नरक सम्बन्धी

प्रज्ञाश्रमण मुनि

तिर्यञ्चगति में २४ स्थान

१ गति	तिर्यञ्च
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
११ योग	मन ४, वचन ४, औदा० द्विक, १ कार्मण
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
६ ज्ञान	सुज्ञान ३, कुज्ञान ३
२ संयम	असंयम, देशसंयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
५ गुणस्थान	१, २, ३,४, ५ तक
१९ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
९ उपयोग	कुज्ञान ३, सुज्ञान ३, दर्शन ३
११ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म ३
५३ आस्रव	आहा० द्विक, वैक्रि० द्विक बिना
६२ लक्ष जाति	तिर्यञ्च एकेन्द्रिय से पञ्चेन्द्रिय पर्यन्त
१३४॥ ल०को० कुल	तिर्यञ्च एकेन्द्रिय से पञ्चेन्द्रिय पर्यन्त

प्रज्ञाश्रमण मुनि

मनुष्यगति में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१३ योग	वैक्रियिक द्विक बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	सब
१४ गुणस्थान	सब
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१२ उपयोग	सब
१६ ध्यान	सब
५५ आस्रव	वैक्रियिक द्विक बिना
१४ लक्ष जाति	मनुष्य सम्बन्धी
१४ ल० को० कुल	मनुष्य सम्बन्धी

प्रज्ञाश्रमण मुनि

देवगति में २४ स्थान

१ गति	देव
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
११ योग	मन ४, वचन ४, वैक्रि० द्विक, १ कार्मण
२ वेद	स्त्री वेद, पुरुष वेद
२४ कषाय	नपुंसक वेद बिना
६ ज्ञान	कुज्ञान ३, सुज्ञान ३
१ संयम	असंयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३/६ लेश्या	पी०,प०,शु० पर्याप्त/अपर्याप्त अपेक्षा
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	सब
४ गुणस्थान	१,२,३,४ तक
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
९ उपयोग	कुज्ञान ३, सुज्ञान ३, दर्शन ३
१० ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म २
५२ आस्रव	औदा० द्विक, आहा० द्विक, १ नपुंसक बिना
४ लक्ष जाति	देव सम्बन्धी
२६ ल० को० कुल	देव सम्बन्धी

एकेन्द्रिय (५ स्थावरों) में २४ स्थान

१ गति	तिर्यञ्च
१ इन्द्रिय	एक इन्द्रिय
५ काय	त्रस बिना
३ योग	औ०, औ० मिश्र, १ कार्मण
१ वेद	नपुंसक
२३ कषाय	स्त्रीवेद, पुरुषवेद बिना
२ ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
१ संयम	असंयम
१ दर्शन	अचक्षुदर्शन
३ लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२ भव्यत्व	सब
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
१ संज्ञित्व	असंज्ञित्व
२ आहारक	सब
१ गुणस्थान	मिथ्यात्व
१४ जीवसमास	एकेन्द्रिय सम्बन्धी
४ पर्याप्ति	भाषा, मन बिना
४ प्राण	स्पर्शन, काय, आयु, श्वास,
४ संज्ञा	सब
३ उपयोग	कुज्ञान २, अचक्षु दर्शन १
८ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४
३८ आस्रव	मि०५, अ०७, क०२३, यो०३,
५२ लक्ष जाति	एकेन्द्रिय सम्बन्धी
६७ ल० को० कुल	एकेन्द्रिय सम्बन्धी

प्रज्ञाश्रमण मुनि

दो इन्द्रिय में २४ स्थान

१ गति	तिर्यञ्च
१ इन्द्रिय	दो इन्द्रिय
१ काय	त्रस
४ योग	औ० द्विक, १ अनु० वचन, १ कार्मण
१ वेद	नपुंसक
२३ कषाय	स्त्रीवेद, पुरुषवेद बिना
२ ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
१ संयम	असंयम
१ दर्शन	अचक्षुदर्शन
३ लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२ भव्यत्व	सब
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
१ संज्ञित्व	असंज्ञित्व
२ आहारक	सब
१ गुणस्थान	मिथ्यात्व
१ जीवसमास	दो इन्द्रिय
५ पर्याप्ति	मन बिना
६ प्राण	इन्द्रिय २, काय, वचन, श्वास, आयु
४ संज्ञा	सब
३ उपयोग	२ कुज्ञान, १ अचक्षुदर्शन
८ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४
४० आस्रव	मि० ५, अ० ८, क० २३, यो० ४
२ लक्ष जाति	दो इन्द्रिय सम्बन्धी
७ ल० को० कुल	दो इन्द्रिय सम्बन्धी

तीन इन्द्रिय में २४ स्थान

१ गति	तिर्यञ्च
१ इन्द्रिय	तीन इन्द्रिय
१ काय	त्रस
४ योग	औ० द्विक, १ अनु० वचन, १ कार्मण
१ वेद	नपुंसक
२३ कषाय	स्त्रीवेद, पुरुषवेद बिना
२ ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
१ संयम	असंयम
१ दर्शन	अचक्षुदर्शन
३ लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२ भव्यत्व	सब
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
१ संज्ञित्व	असंज्ञित्व
२ आहारक	सब
१ गुणस्थान	मिथ्यात्व
१ जीवसमास	तीन इन्द्रिय
५ पर्याप्ति	मन बिना
७ प्राण	इन्द्रिय ३, काय १, वचन १, श्वास १, आयु १
४ संज्ञा	सब
३ उपयोग	२ कुज्ञान, १ अचक्षुदर्शन
८ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
४१ आस्रव	मि० ५, अ० ९, क० २३, यो० ४
२ लक्ष जाति	तीन इन्द्रिय सम्बन्धी
८ ल० को० कुल	तीन इन्द्रिय सम्बन्धी

चार इन्द्रिय में २४ स्थान

१ गति	तिर्यञ्च
१ इन्द्रिय	चौ इन्द्रिय
१ काय	त्रस
४ योग	औ० द्विक, १ अनु० वचन, १ कार्मण
१ वेद	नपुंसक
२३ कषाय	स्त्रीवेद, पुरुषवेद बिना
२ ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन
३ लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२ भव्यत्व	सब
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
१ संज्ञित्व	असंज्ञित्व
२ आहारक	सब
१ गुणस्थान	मिथ्यात्व
१ जीवसमास	चौ इन्द्रिय
५ पर्याप्ति	मन बिना
८ प्राण	इन्द्रिय ४, काय १, वचन १, श्वास १, आयु १
४ संज्ञा	सब
४ उपयोग	कुज्ञान २, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४
४२ आस्रव	मि० ५, अ० १०, क० २३, यो० ४
२ लक्ष जाति	चार इन्द्रिय सम्बन्धी
९ ल० को० कुल	चार इन्द्रिय सम्बन्धी

प्रज्ञाश्रमण मुनि

पञ्चेन्द्रिय में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
१४ गुणस्थान	सब
२ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय सैनी, असैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१२ उपयोग	सब
१६ ध्यान	सब
५७ आस्त्रव	सब
२६ लक्ष जाति	पञ्चेन्द्रिय
१०८॥ ल० को० कुल	पञ्चेन्द्रिय

* त्रसकाय में २४ स्थान

४ गति	सब
४ इन्द्रिय	एकेन्द्रिय जाति बिना
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
१४ गुणस्थान	सब
५ जीवसमास	त्रस सम्बन्धी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१२ उपयोग	सब
१६ ध्यान	सब
५७ आस्रव	सब
३२ लक्ष जाति	३२ लाख
१३२।। ल० को० कुल	त्रसों के सभी

*पाँच स्थावर काय की मार्गणा को एक इन्द्रिय मार्गणा से लगा लेना, अतः यहाँ केवल त्रसकाय का कॉलम है।

प्रज्ञाश्रमण मुनि

सत्य व ★अनुभय; मन-वचन योग में २४ योग

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१ योग	स्वकीय १-१
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व,
१ आहारक	आहारक
१३ गुणस्थान	अयोग बिना
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१२ उपयोग	सब
१५ ध्यान	व्युपरतक्रियानिर्वृत्ति बिना
४३ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५, योग १
२६ लक्ष जाति	पञ्चेन्द्रिय सब
१०८॥ ल० को० कुल	पञ्चेन्द्रिय सब

★ अनुभय वचन योग में यह विशेषता है कि यह विकलचतुष्क में भी पाया जाता है।

प्रज्ञाश्रमण मुनि

असत्य व उभय; मन-वचन योग में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१ योग	स्वकीय १-१
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
७ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
७ संयम	सब
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१२ गुणस्थान	सयोग, अयोग बिना
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१० उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन ३
१४ ध्यान	अन्त के २ शुक्ल बिना
४३ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५, योग १
२६ लक्ष जाति	पञ्चेन्द्रिय सब
१०८॥ ल० को० कुल	पञ्चेन्द्रिय सब

प्रज्ञाश्रमण मुनि

औदारिक काययोग में २४ स्थान

२ गति	तिर्यञ्च, मनुष्य
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१ योग	औदारिक
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	सब
१ आहारक	आहारक
१३ गुणस्थान	अयोग बिना
१९ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१२ उपयोग	सब
१५ ध्यान	व्युपरतक्रियानिर्वृत्ति बिना
४३ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५, योग १
७६ लक्ष जाति	तिर्यञ्च, मनुष्य
१४८।। ल० को० कुल	तिर्यञ्च, मनुष्य

औदारिकमिश्र काययोग में २४ स्थान

२ गति	तिर्यञ्च, मनुष्य
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१ योग	औदारिकमिश्र
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
६ ज्ञान	कुअवधि, मनःपर्यय बिना
२ संयम	असंयम, यथाख्यात
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	भाव ६ (द्रव्य से एक कापोत)
२ भव्यत्व	सब
४ सम्यक्त्व	उपशम, मिश्र बिना
२ संज्ञित्व	सब
१ आहारक	आहारक
४ गुणस्थान	१, २, ४, १३
१९ जीवसमास	सब
३ पर्याप्ति	श्वास, भाषा, मन बिना
७ प्राण	मन, वच, श्वास बिना
४ संज्ञा	सब
१० उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ४
११ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म २, शुक्ल १
४३ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५, योग १
७६ लक्ष जाति	तिर्यञ्च, मनुष्य
१४८॥ ल० को० कुल	तिर्यञ्च, मनुष्य

वैक्रियिक काययोग में २४ स्थान

२ गति	देव, नरक
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१ योग	वैक्रियिक काययोग
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
६ ज्ञान	सुज्ञान ३, कुज्ञान ३
१ संयम	असंयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
४ गुणस्थान	१, २, ३, ४ तक
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
९ उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
१० ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म २
४३ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५, योग १
८ लक्ष जाति	देव, नारकी
५१ ल० को० कुल	देव, नारकी

वैक्रियिकमिश्र काययोग में २४ स्थान

२ गति	देव, नरक
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१ योग	वैक्रियिक मिश्र
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
५ ज्ञान	सुज्ञान आदि ३, कुज्ञान आदि २
१ संयम	असंयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	भाव ६ (द्रव्य से एक कापोत)
२ भव्यत्व	सब
५ सम्यक्त्व	मिश्र बिना
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
३ गुणस्थान	१, २, ४
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय सैनी
३ पर्याप्ति	श्वास, भाषा, मन बिना
७ प्राण	मन, वच, श्वास बिना
४ संज्ञा	सब
८ उपयोग	ज्ञान ५, दर्शन ३
१० ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म २
४३ आस्त्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५, योग १
८ लक्ष जाति	देव, नारकी
५१ ल० को० कुल	देव, नारकी

आहारक/आहारकमिश्र काययोग में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१ योग	स्व-स्व योग
१ वेद	पुरुष
११ कषाय	संज्वलन ४, हास्य ६, वेद १
३ ज्ञान	सुमति, श्रुत, अवधि
२ संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना
३ दर्शन	केवल दर्शन बिना
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
२ सम्यक्त्व	क्षायिक, वेदक (क्षयोपशम)
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	प्रमत्त ६वाँ
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय सैनी
६/३ पर्याप्ति	६ पर्याप्त/३ अपर्याप्त-मिश्र में
१०/७ प्राण	१० आहारक/७ मिश्र में
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	सुज्ञान ३, दर्शन ३
७ ध्यान	आर्त्त ३, धर्म ४
१२ आस्रव	कषाय ११, योग १ स्व-स्व
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

कार्मणकाययोग में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१ योग	कार्मणकाय योग
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
६ ज्ञान	कुअवधि, मनःपर्यय बिना
२ संयम	असंयम, यथाख्यात
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	भाव ६ (द्रव्य से एक शुक्ल)
२ भव्यत्व	सब
५ सम्यक्त्व	मिश्र बिना
२ संज्ञित्व	सब
१ आहारक	अनाहारक
४ गुणस्थान	१, २, ४, १३
१९ जीवसमास	सब
० पर्याप्ति	० अपर्याप्ति
७ प्राण	मन, वच, श्वास बिना
४ संज्ञा	सब
१० उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ४
१० ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म १, शुक्ल १
४३ आस्त्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५, योग १
८४ लक्ष जाति	सब
१९९ ॥ ल० को० कुल	सब

प्रज्ञाश्रमण मुनि

भाव-स्त्रीवेद में २४ स्थान

३ गति	देव, मनुष्य, तिर्यञ्च
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१३ योग	आहारक द्विक बिना
१ वेद	स्त्रीवेद
२३ कषाय	पुरुष, नपुंसक बिना
६ ज्ञान	सुज्ञान ३, कुज्ञान ३
४ संयम	अ०, दे०, सामा० छेदोपस्थापना
३ दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
९ गुणस्थान	आदि के ९ तक
२ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय, असैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
९ उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
१३ ध्यान	अन्त के ३ ध्यान बिना
५३ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २३, योग १३
२२ लक्ष जाति	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव
८३ ।। ल० को० कुल	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव

प्रज्ञाश्रमण मुनि

भाव-पुरुष वेद में २४ स्थान

३ गति	देव, मनुष्य, तिर्यञ्च
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
१ वेद	पुरुष वेद
२३ कषाय	स्त्री, नपुंसक बिना
७ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
५ संयम	सूक्ष्मसाम्पराय, यथाख्यात बिना
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
९ गुणस्थान	आदि के ९ तक
२ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय, असैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१० उपयोग	केवलज्ञान, केवलदर्शन बिना
१३ ध्यान	अन्त के ३ ध्यान बिना
५५ आस्रव	स्त्री, नपुंसक बिना
२२ लक्ष जाति	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव
८३।। ल० को० कुल	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव

प्रज्ञाश्रमण मुनि

भाव-नपुंसक वेद में २४ स्थान

३ गति	नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक द्विक बिना
१ वेद	नपुंसक वेद
२३ कषाय	स्त्री, पुरुष वेद बिना
६ ज्ञान	मनःपर्यय, केवलज्ञान बिना
४ संयम	अ०, दे०, सामायिक, छेदोपस्थापना
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
९ गुणस्थान	आदि के ९ तक
१९ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
९ उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
१३ ध्यान	अन्त के ३ ध्यान बिना
५३ आस्रव	आ० द्विक, स्त्रीवेद, पुरुषवेद बिना
८० लक्ष जाति	नारकी, तिर्यञ्च, मनुष्य
१७३॥ ल० को० कुल	नारकी, तिर्यञ्च, मनुष्य

अनन्तानुबन्धी चतुष्क में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक द्विक बिना
३ वेद	सब
१० कषाय	हास्यादि ९, १ स्व-स्व कषाय
३ ज्ञान	कुज्ञान
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
२ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
२ गुणस्थान	मिथ्यात्व, सासादन
१९ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
५ उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४
४० आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० १०, योग १३
८४ लक्ष जाति	सब
१९९॥ ल० को० कुल	सब

प्रज्ञाश्रमण मुनि

अप्रत्याख्यान चतुष्क में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१३ योग	आहारक द्विक बिना
३ वेद	सब
१० कषाय	हास्यादि ९, १ स्व-स्व कषाय
३ ज्ञान	सुज्ञान ३
१ संयम	असंयम
३ दर्शन	केवल दर्शन बिना
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
४ सम्यक्त्व	मिश्र, उपशम, वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	सब
२ गुणस्थान	३, ४
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	सुज्ञान ३, दर्शन ३
१० ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म २
३५ आस्रव	अ० १२, क० १०, योग १३
२६ लक्ष जाति	नारकी ४, पशु ४, मनुष्य १४, देव ४
१०८॥ ल० को० कुल	नारकी, पशु, मनुष्य, देव

प्रत्याख्यान ४ कषाय में २४ स्थान

२ गति	मनुष्य, तिर्यञ्च
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
९ योग	मन ४, वचन ४, औदारिक १
३ वेद	सब
१० कषाय	हास्यादि ९, १ स्व-स्व कषाय
३ ज्ञान	सुज्ञान ३
१ संयम	संयमासंयम
३ दर्शन	केवल दर्शन बिना
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
३ सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	देशव्रत
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	सुज्ञान ३, दर्शन ३
११ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म ३
३० आस्रव	अविरत ११, कषाय १०, योग ९
१८ लक्ष जाति	पशु, मनुष्य
५७ ॥ ल० को० कुल	पशु,मनुष्य

संज्वलन-त्रिक में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
११ योग	मन ४, वचन ४, औ० १, आहा० द्विक
३ वेद	सब
१० कषाय	हास्यादि ९, १ स्व-स्व कषाय
४ ज्ञान	केवलज्ञान बिना; सुज्ञान ४
३ संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार०
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
३ सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
४ गुणस्थान	६, ७, ८, ९
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
७ उपयोग	सुज्ञान ४, दर्शन ३
८ ध्यान	आर्त्त ३, धर्म ४, शुक्ल १
२१ आस्रव	योग ११, कषाय १०
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

संज्वलन-लोभ में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
११/९ योग★	मन ४, वचन ४, औ० १, आहा० २
३/0 वेद	सब/वेद रहित
१0/१ कषाय	हास्यादि ९, सूक्ष्मलोभ १
४ ज्ञान	केवलज्ञान बिना, सुज्ञान ४
३/१ संयम	सामा०, छेदो०, परिहार०/ सूक्ष्म०
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना,
३/१ लेश्या	३ शुभ/ शुक्ल १
१ भव्यत्व	भव्यत्व
३/२ सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक,
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
५ गुणस्थान	६ से १0 तक
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१0 प्राण	सब
४/१ संज्ञा	सब/एक
७ उपयोग	सुज्ञान ४, दर्शन ३
८/१ ध्यान	आर्त्त ३, धर्म ४, शुक्ल १
२१/१0 आस्रव	योग ११/९, कषाय १0/१
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

★ योग आदि में ऑब्लिक (/) की संख्या १0वें गुणस्थान की है। जैसे - ९,0,१ आदि।

प्रज्ञाश्रमण मुनि

हास्यादि षट् में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२० कषाय	क्रोधादि १६, वेद ३, हास्यादि १ स्व-स्व
७ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
५ संयम	सूक्ष्म०, यथाख्यात बिना
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
८ गुणस्थान	१ से ८ तक
१९ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१० उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन ३
१३ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म ४, शुक्ल १
५२ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २०, योग १५
८४ लक्ष जाति	सब
१९९॥ ल० को० कुल	सब

कुमति-कुश्रुत ज्ञान में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक द्विक बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
१ ज्ञान	स्व-स्व
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
२ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
२ गुणस्थान	मिथ्यात्व, सासादन
१९ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
३ उपयोग	ज्ञान १ स्व-स्व, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४,
५५ आस्रव	आहारक द्विक बिना
८४ लक्ष जाति	सब
१९९॥ ल० को० कुल	सब

प्रज्ञाश्रमण मुनि

कुअवधिज्ञान (विभङ्ग) में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१० योग	म० ४, व० ४, औ० १, वै० १
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
१ ज्ञान	कुअवधि (विभङ्ग)
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
२ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
२ गुणस्थान	मिथ्यात्व, सासादन
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
३ उपयोग	कुअवधिज्ञान १, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४
५२ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५, यो० १०
२६ लक्ष जाति	पञ्चेन्द्रिय
१०८॥ ल० को० कुल	पञ्चेन्द्रिय

मति-श्रुतज्ञान में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनन्तानुबन्धी ४ बिना
१ ज्ञान	१ स्व-स्व
७ संयम	सब
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
३ सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	सब
९ गुणस्थान	४ से १२ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
३ उपयोग	सुज्ञान १ स्व-स्व, दर्शन २
१४ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, ध० ४, शु० २
४८ आस्रव	अविरत १२, कषाय २१, योग १५
२६ लक्ष जाति	पञ्चेन्द्रिय
१०८॥ ल० को० कुल	पञ्चेन्द्रिय

प्रज्ञाश्रमण मुनि

अवधिज्ञान में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनन्तानुबन्धी ४ बिना
१ ज्ञान	अवधिज्ञान
७ संयम	सब
१ दर्शन	अवधिदर्शन
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
४ सम्यक्त्व	मिश्र, उपशम, वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	सब
१० गुणस्थान	३ से १२ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
२ उपयोग	सुज्ञान १, दर्शन १
१४ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, ध० ४, शु० २
४८ आस्रव	अविरत १२, कषाय २१, योग १५
२६ लक्ष जाति	पञ्चेन्द्रिय
१०८॥ ल० को० कुल	पञ्चेन्द्रिय

प्रज्ञाश्रमण मुनि

मनःपर्ययज्ञान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
९ योग	मन ४, वचन ४, औदारिक १
१ वेद	पुरुष
११ कषाय	संज्वलन ४, हास्य ६, पुरुष वेद १
१ ज्ञान	मनःपर्यय
४ संयम	सामायिक, छेदोप०, सूक्ष्म०, यथा०
१ दर्शन	अवधिदर्शन
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
३ सम्यक्त्व	उपशम,वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
७ गुणस्थान	६ से १२ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
२ उपयोग	मनःपर्ययज्ञान १, अवधिदर्शन १
९ ध्यान	आर्त्त ३, धर्म ४, शुक्ल २
२० आस्रव	योग ९, कषाय ११
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

प्रज्ञाश्रमण मुनि

केवलज्ञान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
७ योग	मन २, वचन २, औ० द्विक, कार्मण १
० वेद	० अपगत वेद (भाववेद अपेक्षा)
० कषाय	० अकषाय
१ ज्ञान	केवलज्ञान
१ संयम	यथाख्यात
१ दर्शन	केवलदर्शन
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	क्षायिक
० संज्ञित्व	० भावमन अपेक्षा (द्रव्यमन है)
२ आहारक	सब
२ गुणस्थान	सयोगकेवली, अयोगकेवली
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय (द्रव्यापेक्षा)
६ पर्याप्ति	सब
४ प्राण	काय०, वच०, श्वास०, आयु
० संज्ञा	सत्ता अपेक्षा शून्य
२ उपयोग	केवलज्ञान १, केवलदर्शन १
२ ध्यान	अन्त के २ शुक्ल
७ आस्रव	योग (ऊपर अङ्कित)
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

असंयम में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक द्विक बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
६ ज्ञान	कुज्ञान ३, सुज्ञान ३
१ संयम	अंसयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
४ गुणस्थान	१ से ४ तक
१९ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
९ उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
१० ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म २
५५ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५, योग १३
८४ लक्ष जाति	सब
१९९ ।। ल० को० कुल	सब

प्रज्ञाश्रमण मुनि

संयमासंयम में २४ स्थान

२ गति	मनुष्य, तिर्यञ्च
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
९ योग	मन ४, वचन ४, औदारिक १
३ वेद	सब
१७ कषाय	प्रत्याख्यान ४, संज्वलन ४, नोकषाय ९
३ ज्ञान	सुज्ञान ३
१ संयम	संयमासंयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
३ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	देशव्रत
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	सुज्ञान ३, दर्शन ३
११ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म ३
३७ आस्रव	अविरत ११, कषाय १७, योग ९
१८ लक्ष जाति	पशु, मनुष्य
५७।। ल० को० कुल	पशु, मनुष्य

सामायिक, छेदोपस्थापना संयम में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
११ योग	मन ४, वचन ४, औदारिक १, आहारक द्विक
३ वेद	सब
१३ कषाय	संज्वलन ४, हास्यादि ९
४ ज्ञान	केवलज्ञान बिना, ४ सुज्ञान
१ संयम	१ स्व-स्व (सामायिक/छेदोपस्थापना)
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
३ सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
४ गुणस्थान	६ से ९ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
७ उपयोग	सुज्ञान ४, दर्शन ३
८ ध्यान	आर्त्त ३, धर्म ४, शुक्ल १
२४ आस्रव	कषाय १३, योग ११
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

प्रज्ञा श्रमण मुनि

परिहारविशुद्धि संयम में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
९ योग	मन ४, वचन ४, औदारिक १
१ वेद	पुरुष वेद
११ कषाय	संज्वलन ४, हास्यादि ६, पुरुष वेद १
३ ज्ञान	मत्यादि - ३ सुज्ञान
१ संयम	परिहारविशुद्धि
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
२ सम्यक्त्व	क्षायिक, वेदक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
२ गुणस्थान	प्रमत्त, अप्रमत्त
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
७ ध्यान	आर्त्त ३, धर्म ४
२० आस्त्रव	कषाय ११, योग ९
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

सूक्ष्मसाम्पराय संयम में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
९ योग	मन ४, वचन ४, औदारिक १
० वेद	० भाववेद अपेक्षा
१ कषाय	संज्वलन सूक्ष्म लोभ
४ ज्ञान	केवलज्ञान बिना, ४ सुज्ञान
१ संयम	सूक्ष्मसाम्पराय
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
२ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	१०वाँ
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
१ संज्ञा	परिग्रह
७ उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१ ध्यान	प्रथम शुक्ल
१० आस्रव	संज्वलन कषाय १, योग ९
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

प्रज्ञाश्रमण मुनि

यथाख्यात संयम में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
११ योग	मन ४, वचन ४, औ० द्विक, का० १
० वेद	० भाव वेद अपेक्षा
० कषाय	०
५ ज्ञान	सुमत्यादि यथायोग्य
१ संयम	यथाख्यात
४ दर्शन	सब
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
२ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	सब
४ गुणस्थान	११ से १४ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
० संज्ञा	० भाव अपेक्षा
९ उपयोग	सुज्ञान ५, दर्शन ४
४ ध्यान	शुक्ल ४
११ आस्त्रव	योग ११
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

प्रज्ञाश्रमण मुनि

चक्षुदर्शन में २४ स्थान

४ गति	सब
२ इन्द्रिय	चौ इन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
५ ज्ञान	३ कुज्ञान, २ सुज्ञान
७ संयम	सब
१ दर्शन	चक्षुदर्शन
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
१२ गुणस्थान	१ से १२ तक
३ जीवसमास	चौ इन्द्रिय १, सैनी-असैनी पञ्चे० २
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	ज्ञान ५, दर्शन १
१४ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म ४, शुक्ल २
५७ आस्रव	सब
२८ लक्ष जाति	चौ इन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय
११७ ।। ल० को० कुल	चौ इन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय

प्रज्ञाश्रमण मुनि

अचक्षुदर्शन में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
५ ज्ञान	३ कुज्ञान, २ सुज्ञान
७ संयम	सब
१ दर्शन	अचक्षुदर्शन
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
१२ गुणस्थान	११ से १२ तक
१९ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	ज्ञान ५, दर्शन १
१४ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म ४, शुक्ल २
५७ आस्रव	सब
८४ लक्ष जाति	सब
१९९॥ ल० को० कुल	सब

प्रज्ञाश्रमण मुनि

अवधिदर्शन में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनन्तानुबन्धी ४ बिना
२ ज्ञान	अवधि, मनःपर्ययज्ञान
७ संयम	सब
१ दर्शन	अवधिदर्शन
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
४ सम्यक्त्व	मिश्र, उपशम, वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	सब
१० गुणस्थान	३ से १२ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
३ उपयोग	सुज्ञान २, दर्शन १
१४ ध्यान	अन्त के २ शुक्ल बिना
४८ आस्त्रव	मिथ्यात्व ५, कषाय ४ बिना
२६ लक्ष जाति	न०, तिर्यञ्च सैनी पं०, मनुष्य, देव
१०८॥ ल० को० कुल	न०, तिर्यञ्च सैनी पं०, मनुष्य, देव

केवलदर्शन में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
७ योग	मन २, वचन २, औ० द्विक, का० १
० वेद	० भाव वेद अपेक्षा
० कषाय	० पूर्ण
१ ज्ञान	केवलज्ञान
१ संयम	यथाख्यात
१ दर्शन	केवलदर्शन
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	क्षायिक
० संज्ञित्व	० भावापेक्षा
२ आहारक	सब
२ गुणस्थान	१३, १४
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय (द्रव्यापेक्षा)
६ पर्याप्ति	सब
४ प्राण	काय १, वचन १, श्वास १, आयु १
० संज्ञा	० पूर्ण
२ उपयोग	केवलज्ञान १, केवलदर्शन १
२ ध्यान	अन्त के २ शुक्ल
७ आस्रव	७ योग
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

कृष्ण, नील, कापोत लेश्या में २४ स्थान

३/४ गति	देव अपर्याप्त अपेक्षा
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक द्विक बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
६ ज्ञान	सुज्ञान ३, कुज्ञान ३
१ संयम	असंयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
१ लेश्या	१ स्व-स्व (कृष्ण/नील/कापोत)
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
४ गुणस्थान	१ से ४ तक
१९ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
९ उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
१० ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म २
५५ आस्रव	आहारक द्विक बिना
८०/८४ लक्ष जाति	देव बिना/देव सहित
१७३॥/१९९॥ल०को०कु०	देव बिना/देव सहित

प्रज्ञाश्रमण मुनि

पीत, पद्म लेश्या में २४ स्थान

३ गति	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
७ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
५ संयम	सूक्ष्मसाम्पराय, यथाख्यात बिना
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
१ लेश्या	१ स्व-स्व (पीत/पद्म)
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
२/१ संज्ञित्व	पीत में सैनी-असैनी २/पद्म में सैनी १
२ आहारक	सब
७ गुणस्थान	१ से ७ तक
२/१ जीवसमास	पीत में सैनी-असैनी २/पद्म में सैनी १
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१० उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन ३
१२ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म ४
५७ आस्रव	सब
२२ लक्ष जाति	पशु, मनुष्य, देव
८३ ॥ ल० को० कुल	पशु, मनुष्य, देव

शुक्ल लेश्या में २४ स्थान

३ गति	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
१ लेश्या	शुक्ल
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	सब
१३ गुणस्थान	१ से १३ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१२ उपयोग	सब
१५ ध्यान	अन्त का शुक्ल १ बिना
५७ आस्रव	सब
२२ लक्ष जाति	पशु, मनुष्य, देव
८३ ॥ ल० को० कुल	पशु, मनुष्य, देव

प्रज्ञाश्रमण मुनि

भव्यत्व में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
१४ गुणस्थान	सब
१९ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१२ उपयोग	सब
१६ ध्यान	सब
५७ आस्त्रव	सब
८४ लक्ष जाति	सब
१९९॥ ल० को० कुल	सब

प्रज्ञाश्रमण मुनि

अभव्यत्व में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक द्विक बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
३ ज्ञान	कुज्ञान ३
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	अभव्यत्व
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
१ गुणस्थान	मिथ्यात्व
१९ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
५ उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४
५५ आस्रव	आहारक द्विक बिना
८४ लक्ष जाति	सब
१९९॥ ल० को० कुल	सब

मिथ्यात्व-सम्यक्त्व में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक द्विक बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
३ ज्ञान	कुज्ञान
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
१ गुणस्थान	मिथ्यात्व
१९ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
५ उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४
५५ आस्रव	आहारक द्विक बिना
८४ लक्ष जाति	सब
१९९॥ ल० को० कुल	सब

सासादन-सम्यक्त्व में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१३ योग	आहारक द्विक बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
३ ज्ञान	कुज्ञान
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	सासादन
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	सब
१ गुणस्थान	सासादन
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
५ उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
५० आस्रव	मिथ्यात्व ५, आहारक द्विक बिना
२६ लक्ष जाति	नारकी, पशु, मनुष्य, देव
१०८॥ ल० को० कुल	नारकी, पशु, मनुष्य, देव

प्रज्ञाश्रमण मुनि

मिश्र-सम्यक्त्व में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१० योग	म० ४, व० ४, औ० १, वै० १
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनन्तानुबन्धी ४ बिना
३ ज्ञान	मिश्रज्ञान
१ संयम	असंयम
३/२ दर्शन★	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	मिश्र सम्यक्त्व
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	मिश्र
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६/५ उपयोग★	मिश्रज्ञान ३, दर्शन ३
९ ध्यान★	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म १
४३ आस्रव	अ० १२, क० २१, यो० १०
२६ लक्ष जाति	नारकी, पशु, मनुष्य, देव
१०८ ॥ ल० को० कुल	नारकी, पशु, मनुष्य, देव

★★★ चौथे गुणस्थान से नीचे आने वाले अवधिज्ञानी के तीसरे गुणस्थान में अवधिदर्शन एवं पहला धर्मध्यान होता है एवं पहले गुणस्थान से तीसरे गुणस्थान में जाने वाले सादि मिथ्यादृष्टि कुअवधिज्ञानी के अवधिदर्शन नहीं होता, क्योंकि कुअवधिज्ञान वाले के दो ही दर्शन होते हैं, अतः तीसरे गुणस्थान में तीन एवं दो दर्शन भी होते हैं।

प्रज्ञाश्रमण मुनि

प्रथम/द्वितीय उपशम-सम्यक्त्व में २४ स्थान

४/२ गति	सब/मनुष्य, देव
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१०/११ योग★	आ० द्विक, १ औ० मि०, १ वै० बिना
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनन्तानुबन्धी ४ बिना
३/४ ज्ञान	सुमत्यादि ३/४
४/६ संयम	अ०, दे०, सा०, छे० ४/६ परिहा० बिना
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	उपशम
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१/२ आहारक	आहारक १/२ आ० अना०
४/८ गुणस्थान	४-७ / ४-११ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
७ उपयोग	सुज्ञान ४, दर्शन ३
१३ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म ४, शुक्ल १
४३/४४ आस्रव	अविरत १२, कषाय २१, योग १०/११
२६/१८ लक्ष जाति	नारकी, पशु, मनुष्य, देव,
१०८ ॥/४० ल० को० कुल	नारकी, पशु, मनुष्य, देव

★ प्रथमोपशम सम्यक्त्व में औदारिक एवं वैक्रियिक काययोग होता है, अतः इसके १० योग होते हैं एवं द्वितीयोपशम सम्यक्त्व में औदारिक, वैक्रियिकमिश्र तथा कार्मण काययोग होने से ११ योग होते हैं।

प्रज्ञाश्रमण मुनि

वेदक अर्थात् क्षयोपशम सम्यक्त्व में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनन्तानुबन्धी ४ बिना
४ ज्ञान	केवलज्ञान बिना, ४ सुज्ञान
५ संयम	सूक्ष्मसाम्पराय, यथाख्यात बिना
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	क्षयोपशम
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	सब
४ गुणस्थान	४,५,६,७ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
७ उपयोग	सुज्ञान ४, दर्शन ३
१२ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म ४
४८ आस्रव	अविरत १२, कषाय २१, योग १५
२६ लक्ष जाति	नारकी, पशु, मनुष्य, देव
१०८॥ ल० को० कुल	नारकी, पशु, मनुष्य, देव

प्रज्ञाश्रमण मुनि

क्षायिक-सम्यक्त्व में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनन्तानुबन्धी ४ बिना
५ ज्ञान	३ कुज्ञान बिना
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	सब
११ गुणस्थान	४ से १४ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
९ उपयोग	सुज्ञान ५, दर्शन ४
१६ ध्यान	सब
४८ आस्रव	अविरत १२, कषाय २१, योग १५
२६ लक्ष जाति	नारकी, पञ्चेन्द्रिय पशु, मनुष्य, देव
९६ ल० को० कुल	नारकी, ★पञ्चेन्द्रिय पशु, मनुष्य, देव

★क्षायिक सम्यक्त्व में १२॥ लाख कुल कोडि पञ्चेन्द्रिय जलचर जीव नहीं होते हैं।

संज्ञी में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
७ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
७ संयम	सब
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	सब
१२ गुणस्थान	१ से १२ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१० उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन ३
१४ ध्यान	अन्त के दो शुक्ल बिना
५७ आस्रव	सब
२६ लक्ष जाति	नारकी, पञ्चेन्द्रिय पशु, मनुष्य, देव
१०८ ॥ ल० को० कुल	नारकी, पञ्चेन्द्रिय पशु, मनुष्य, देव

प्रज्ञाश्रमण मुनि

असंज्ञी में २४ स्थान

१ गति	तिर्यञ्च
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
४ योग	औ० द्विक, अनुभय वचन १, कार्मण १
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
२ ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
४ लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत, पीत
२ भव्यत्व	सब
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
१ संज्ञित्व	असंज्ञित्व
२ आहारक	सब
१ गुणस्थान	मिथ्यात्व
१८ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय बिना
५ पर्याप्ति	मन बिना
९ प्राण	मन बिना
४ संज्ञा	सब
४ उपयोग	कुज्ञान २, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४
४५ आस्रव	मि० ५, अवि० ११, कषाय २५, योग ४
६२ लक्ष जाति	असैनी तिर्यञ्च
१३४।। ल० को० कुल	असैनी तिर्यञ्च

आहारक में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१४ योग	कार्मण बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	सब
१ आहारक	आहारक
१३ गुणस्थान	१ से १३ तक
१९ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१२ उपयोग	सब
१५ ध्यान	अन्त का १ शुक्ल बिना
५६ आस्रव	कार्मण बिना
८४ लक्ष जाति	सब
१९९ ॥ ल० को० कुल	सब

अनाहारक में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१ योग	कार्मण
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
६ ज्ञान	विभङ्ग, मनःपर्यय बिना
२ संयम	असंयम, यथाख्यात
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
५ सम्यक्त्व	मिश्र बिना
२ संज्ञित्व	सब
१ आहारक	अनाहारक
५ गुणस्थान	१, २, ४, १३, १४
१९ जीवसमास	सब
० पर्याप्ति	० (एक भी पर्याप्ति नहीं)
७ प्राण	श्वास, मन, वचन बिना
४ संज्ञा	सब
१० उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ४
१२ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म २, ★शुक्ल २
४३ आस्रव	मि० ५, अ० १२, कषाय २५, योग १
८४ लक्ष जाति	सब
१९९॥ ल०को०कुल	सब

★ तेरहवें गुणस्थान की अनाहारक अवस्था में उपचार से तीसरा शुक्लध्यान लिया है।

प्रज्ञाश्रमण मुनि

मिथ्यात्व गुणस्थान में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक द्विक बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
३ ज्ञान	कुज्ञान
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	सब
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
१ गुणस्थान	मिथ्यात्व,
१९ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
५ उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४
५५ आस्रव	आहारक द्विक बिना
८४ लक्ष जाति	सब
१९९ ॥ ल० को० कुल	सब

सासादन गुणस्थान में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१३ योग	आहारक द्विक बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
३ ज्ञान	कुज्ञान
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	सासादन
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	सब
१ गुणस्थान	सासादन
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
५ उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४
५० आस्रव	अविरत १२, कषाय २५, योग १३
२६ लक्ष जाति	पञ्चेन्द्रिय
१०८॥ ल० को० कुल	पञ्चेन्द्रिय

प्रज्ञाश्रमण मुनि

मिश्र गुणस्थान में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१० योग	मन ४, वचन ४, औदा० १, वैक्रि० १
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनन्तानुबन्धी ४ बिना
३ ज्ञान	मिश्रज्ञान
१ संयम	असंयम
३/२ दर्शन★	केवलदर्शन के बिना
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	मिश्रसम्यक्त्व
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	मिश्र
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६/५ उपयोग	मिश्रज्ञान ३, दर्शन ३/२
९ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म १
४३ आस्रव	अविरत १२, कषाय २१, योग १०
२६ लक्ष जाति	पञ्चेन्द्रिय
१०८ ॥ ल० को० कुल	पञ्चेन्द्रिय

★ पृष्ठ ८७ पर मिश्र सम्यक्त्व की मार्गणानुसार

अविरत गुणस्थान में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१३ योग	आहारक द्विक बिना
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनन्तानुबन्धी ४ बिना
३ ज्ञान	सुज्ञान
१ संयम	असंयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
३ सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	सब
१ गुणस्थान	अविरति
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	सुज्ञान ३, दर्शन ३
१० ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म २
४६ आस्रव	अविरत १२, कषाय २१, योग १३
२६ लक्ष जाति	पञ्चेन्द्रिय
१०८॥ ल० को० कुल	पञ्चेन्द्रिय

प्रज्ञाश्रमण मुनि

देशव्रत गुणस्थान में २४ स्थान

२ गति	पशु, मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
९ योग	मन ४, वचन ४, औदारिक १
३ वेद	सब
१७ कषाय	अनन्तानुबन्धी ४, अप्रत्याख्यान ४ बिना
३ ज्ञान	सुज्ञान
१ संयम	संयमासंयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
३ सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	देशव्रत
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	सुज्ञान ३, दर्शन ३
११ ध्यान	आर्त्त ४, रौद्र ४, धर्म ३
३७ आस्रव	अविरत ११, कषाय १७, योग ९
१८ लक्ष जाति	पशु ४, मनुष्य १४
५७॥ ल०को० कुल	पशु ४३॥ मनुष्य १४

प्रमत्त-गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
११ योग	म० ४, व० ४, औ० १, आहा० द्विक
३ वेद	भाव वेद ३ (द्रव्य से पुरुष)
१३ कषाय	संज्वलन ४, हास्यादि ९
४ ज्ञान	सुज्ञान, केवलज्ञान बिना
३ संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना, परि०
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
३ सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	प्रमत्त
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
७ उपयोग	सुज्ञान ४, दर्शन ३
७ ध्यान	आर्त्त ३, धर्म ४
२४ आस्रव	कषाय १३, योग ११
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

प्रज्ञाश्रमण मुनि

अप्रमत्त-गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
९ योग	मन ४, वचन ४, औदारिक १
३ वेद	भाव वेद ३ (द्रव्य से पुरुष)
१३ कषाय	संज्वलन ४, हास्यादि ९
४ ज्ञान	सुज्ञान, केवलज्ञान बिना
३ संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना, परि०
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
३ सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	अप्रमत्त
१ जीवसामास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
३ संज्ञा	भय, मैथुन, परिग्रह
७ उपयोग	सुज्ञान ४, दर्शन ३
४ ध्यान	धर्म ४
२२ आस्रव	कषाय १३, योग ९
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

प्रज्ञाश्रमण मुनि

अपूर्वकरण गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
९ योग	मन ४, वचन ४, औदारिक १
३ वेद	भाव वेद ३ (द्रव्य से पुरुष)
१३ कषाय	संज्वलन ४, हास्यादि ९
४ ज्ञान	सुज्ञान, केवलज्ञान बिना
२ संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
२ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	अपूर्वकरण
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
३ संज्ञा	आहार बिना
७ उपयोग	सुज्ञान ४, दर्शन ३
१ ध्यान	पृथक्त्ववितर्कवीचार
२२ आस्रव	कषाय १३, योग ९
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
९ योग	मन ४, वचन ४ औदारिक १
३ वेद	भाव वेद ३ (द्रव्य से पुरुष)
७ कषाय	संज्वलन ४, वेद ३
४ ज्ञान	सुज्ञान, केवलज्ञान बिना
२ संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
२ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
२ संज्ञा	मैथुन, परिग्रह
७ उपयोग	सुज्ञान ४, दर्शन ३
१ ध्यान	पृथक्त्ववितर्कवीचार
१६ आस्रव	कषाय ७, योग ९
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
९ योग	मन ४, वचन ४, औदारकि १
० वेद	० भाव वेद अपेक्षा (द्रव्य से पुरुष)
१ कषाय	संज्वलन (सूक्ष्म) लोभ
४ ज्ञान	सुज्ञान, केवलज्ञान बिना
१ संयम	सूक्ष्मसाम्पराय
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
२ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	सूक्ष्मसाम्पराय
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
१ संज्ञा	परिग्रह (सूक्ष्मलोभ)
७ उपयोग	सुज्ञान ४, दर्शन ३
१ ध्यान	पृथक्त्ववितर्कवीचार
१० आस्रव	कषाय १, योग ९
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

उपशान्तकषाय गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
९ योग	मन ४, वचन ४, औदारिक १
० वेद	० भाववेद अपेक्षा (द्रव्य से पुरुष)
० कषाय	० उदयाभावापेक्षा
४ ज्ञान	सुज्ञान, केवलज्ञान बिना
१ संयम	यथाख्यात
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
२ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	उपशान्त कषाय
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
० संज्ञा	० कार्याभावत्वात्
७ उपयोग	सुज्ञान ४, दर्शन ३
१ ध्यान	पृथक्त्ववितर्कवीचार
९ आस्रव	योग ९
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

क्षीणकषाय गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
९ योग	मन ४, वचन ४, औदारिक १
० वेद	० भाव वेद अपेक्षा (द्रव्य से पुरुष)
० कषाय	० पूर्ण रूप
४ ज्ञान	सुज्ञान, केवलज्ञान बिना
१ संयम	यथाख्यात
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	क्षीणकषाय
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
० संज्ञा	० पूर्णरूप
७ उपयोग	सुज्ञान ४, दर्शन ३
१ ध्यान	एकत्ववितर्कवीचार
९ आस्रव	योग ९
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

प्रज्ञाश्रमण मुनि

सयोगकेवली गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
७ योग	सत्य म०-व० २, अनु० म०-व०२, औ०२, कार्मण १
० वेद	० भाव वेद अपेक्षा (द्रव्य से पुरुष)
० कषाय	० पूर्णरूप
१ ज्ञान	केवलज्ञान
१ संयम	यथाख्यात
१ दर्शन	केवलदर्शन
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	क्षायिक
० संज्ञित्व	० भावमन अपेक्षा
२ आहारक	सब
१ गुणस्थान	सयोगकेवली
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय सैनी (अपेक्षा द्रव्यमन)
६ पर्याप्ति	सब
४ प्राण	वच, काय, श्वास, आयु
० संज्ञा	० पूर्णरूप
२ उपयोग	केवलज्ञान, केवलदर्शन
१ ध्यान	सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति
७ आस्रव	योग ७
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

अयोगकेवली गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
० योग	० पूर्णरूप
० वेद	० पूर्णरूप
० कषाय	० पूर्णरूप
१ ज्ञान	केवलज्ञान
१ संयम	यथाख्यात
१ दर्शन	केवलदर्शन
० लेश्या	० पूर्णरूप
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	क्षायिक
० संज्ञित्व	० पूर्णरूप
१ आहारक	अनाहारक
१ गुणस्थान	अयोगकेवली
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय (द्रव्यइन्द्रिय अपेक्षा)
६ पर्याप्ति	सब
१ प्राण	आयु
० संज्ञा	० पूर्णरूप
२ उपयोग	केवलज्ञान, केवलदर्शन
१ ध्यान	व्युपरतक्रियानिर्वृत्ति
० आस्त्रव	० पूर्णरूप
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

चौबीस ठाणा

दोहा - देव-धर्म-गुरु ग्रन्थकों, वन्दों मन-वच-काय ।
गुणठाणा पर यन्त्र की, रचना कहों बनाय ॥

सवैया, इकतीसा

गति चार, इन्द्री पाँच, काय षट् योग पन्द्रै,
वेद तीन, चौ कषाय, ज्ञान आठ सारे हैं ।
संयम सात, दृग चार, लेश्या षट् भव्य दोय,
सैनी दोय, सम्यक् छै, दोय ही अहारे हैं ॥
गुण चौदा, जीव चौदा, प्रजा षट् प्राण दस,
प्रत्यय सत्तावन, उपयोग भेद बारे हैं ।
ध्यान सोलै, संज्ञा चार, जाति लाख चउरासी,
आधघाटी कुल दौसे, लाख कोडि धारे हैं ॥

चौपइ छन्द (१५,१५ मात्राएँ)

पहिलेतैं चतुलग गति चार, पञ्चम में नर-पशू विचार ।
छट्ठेतैं चौदम लग कही, मानुष गति इक जानों सही ॥
इन्द्री पाँचों हैं मिथ्यात्व, दूजेतैं चौदम लग जात ।
इक पञ्चेन्द्री जिनवर कही, इमि इन्द्रिय वर्णन वरणई ॥
पहिले गुण षट्काय जु लसें, दूजेतैं चौदम त्रस बसें ।
पहिले-दूजे तेरह योग, हारक-द्विक बिन जान नियोग ॥
तीजे में दस इमि गिन लाय, मन-वच अष्ट औदारिक काय ।
वैक्रियिक मिल सब दस भये, चौथे त्रयोदस पहिले कहे ॥

पञ्चम में मन-वच वसु जान, और औदारिक मिल नव ठान ।
प्रमत्त में एकादस योग, हारक-द्विक युत जान नियोग ॥
सप्तमतैं बारम लग जान, नव पञ्चमवत् जान सुजान ।
तेरम जोग सप्त निरधार, अनुभय सत्य, वचन-मन चार ॥
औदारिक औदारिकमिश्र, कार्माण मिल सप्त जू विस्त्र ।
चौदम जोग भये सब क्षीण, ये जोगन की विधि परवीण ॥
वेद प्रथमतैं नव लग तीन, आगे वेद न जान प्रवीन ।
अब कषाय को वर्णन करों, गुणठाणा भिन-भिन उच्चरों ॥

(चौबीस ठाणा अनुवाद)

दोहा अनुवाद

देव-शास्त्र-गुरु एवं धर्म को मन-वचन-काय पूर्वक नमस्कार करके गुणठाणा यन्त्र की रचना कर रहा हूँ ।

(सवैया, इकतीसा अनुवाद)

गति चार, इन्द्रियाँ पाँच, काय छः, योग पन्द्रह, वेद तीन, कषाय चार तथा ज्ञान आठ होते हैं ।

संयम सात, दर्शन चार, लेश्या छः, भव्य दो, सैनी दो, सम्यक्त्व छः तथा आहारक के दो भेद होते हैं ।

गुणस्थान चौदह, जीवसमास चौदह, पर्याप्तियाँ छः, प्राण दस, आस्त्रव (प्रत्यय) सत्तावन तथा उपयोग दो भेद वाला है।

ध्यान सोलह, संज्ञा चार, जाति चौरासी लाख, आधा कम दो सौ अर्थात् एक-सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल धारण करते हैं ।

गुणस्थान में मार्गणाएँ
(चौपइ अनुवाद)

पहले से चौथे गुणस्थान तक चारों गति के जीव, पाँचवें गुणस्थान में मनुष्य और तिर्यञ्च तथा छटवें से चौदहवें गुणस्थान तक केवल मनुष्य गति ही जानना चाहिए।

मिथ्यात्व गुणस्थान में एकेन्द्रिय से पञ्चेन्द्रिय तक तथा दूसरे से चौदहवें गुणस्थान तक केवल एक पञ्चेन्द्रिय जीव ही होते हैं, इस प्रकार जिनेन्द्र भगवान ने इन्द्रिय मार्गणा का वर्णन किया।

पहले गुणस्थान में छहों काय के जीव तथा दूसरे से चौदहवें गुणस्थान में केवल त्रस जीव ही रहते हैं।

पहले और दूसरे गुणस्थान में आहारक-द्विक के बिना तेरह योगों का नियोग, तीसरे गुणस्थान में चार मनोयोग, चार वचन योग, औदारिक काय योग तथा वैक्रियिक काय योग मिलने से दस योग हैं।

चौथे गुणस्थान में आहारक-द्विक के बिना; पूर्व में कहे गए तेरह योग, पाँचवें में मन, वचन के आठ और औदारिक काय मिलकर नौ योग। छटवें प्रमत्त गुणस्थान में आहारक-द्विक सहित ग्यारह योगों का नियोग है।

हे सज्जन पुरुष! सातवें से बारहवें तक पाँचवें गुणस्थान की तरह नौ योग जानना चाहिए। तेरहवें गुणस्थान में अनुभय वचन योग, अनुभय मनोयोग, सत्य वचनयोग, सत्य मनोयोग, औदारिक काययोग, औदारिकमिश्र काययोग

तथा कार्मण काययोग मिलाकर; ये सात योग होते हैं। चौदहवें गुणस्थान में सभी योग क्षीण हो जाते हैं अर्थात् अयोगी अवस्था है, ये योगों की कुशल विधि बतायी गई।

पहले से नववें गुणस्थान तक तीनों वेद रहते हैं तथा हे प्रवीण ! आगे गुणस्थानों में वेद नहीं पाये जाते हैं। अब भिन्न-भिन्न गुणस्थान में कषाय का वर्णन करते हैं।

छप्पय

पहिले दूजे सर्व, मिश्र इकबीस भनीजे ।
चौथे हूँ इकबीस, चौकडी प्रथम न लीजे ॥
अप्रत्याख्यानि बिना, देश - संयम में सतरा ।
प्रत्याख्यानी बिना, तेरें षट्-सत-वसु इतरा ॥
नौवें गुण सब सात हैं, संज्वलन त्रय वेद भन ।
दसवें सूक्षम लोभ इक, आगे हीन कषाय गन ॥
प्रथम-दुतिय कुज्ञान-, तीन तीजे सु मिश्र भन ।
चौथे तीन सुज्ञान, पाँचवें में भी इमि गन ॥
षट्तैं द्वादस तईं, ज्ञान-केवल बिन चारों ।
तेरम-चौदम गुणस्थान, केवल इक धारों ॥
इहि विधि गुण परिज्ञान को, कथन कह्यो जगदीश ने ।
अब संयम रचना कहुँ, जिमि सूत्तर भाषी जिने ॥
पहिलेतैं चतु लगै, असंयम ही इक जानों ।
पञ्चम संयम-देश, छठें-सप्तम इमि जानों ॥
सामायिक, छेदोपस्थाप, परिहार - विशुद्धी ।
अष्टम-नव गुण दोय, नाँहि परिहार विशुद्धी ॥

साम्पराय - सूक्ष्म दसें, ग्यारमतैं जु अयोग तक ।
इक यथाख्यात ही जानिये, ये संयम सुखकर अधिक ॥
पहिले - दूजे दोय, चक्षु - अचक्षु भनीजे ।
त्रयतैं बारम तईं, अवधियुत तीन गनीजे ॥
केवल तेरम-चौद और, षट् लेश्या चतु लग ।
पञ्चम-षष्टम-सप्त, तीन शुभ लेश्या हर अघ ॥
पुनि अष्टमतैं सयोग तक, एक शुकल लेश्या कही ।
गुण चौदहें सब नाशिके, जाय सिद्ध पदवी लही ॥
पहिले भव्य-अभव्य, दुतियतैं भवि चौदम तक ।
त्रयगुण के जो नाम, तहाँ वो ही सम्यक् इक ॥
चतु-पन-षट्-सत माँहि, क्षाय उपशम अरु वेदक ।
वसुतैं ग्यारम तईं दोय, उपशम अरु क्षायिक ॥
शेषन क्षायिक ही कही, सैनी-असैनी मिथ्यात में ।
गुण दूजेतैं चौदम तईं, इक सैनी ही सुखपात में ॥

(छप्पय) अनुवाद

पहले-दूसरे गुणस्थान में सभी (२५), तीसरे, चौथे में प्रथम चौकड़ी के बिना इक्कीस कषाय लेना चाहिए ।

अप्रत्याख्यान के बिना देशसंयम में सत्रह, प्रत्याख्यान के बिना छटवें, सातवें, आठवें गुणस्थान में तेरह कषाय होती हैं ।

नौवें गुणस्थान में चार संज्वलन और तीन वेद; ये सात, दसवें में एक सूक्ष्मलोभ तथा आगे गुणस्थानों में कषाय नहीं पाई जाती है ।

पहले- दूसरे गुणस्थान में तीन कुज्ञान (कुमति-कुश्रुत-कुअवधि), तीसरे में तीन मिश्र ज्ञान, चौथे में तीन सुज्ञान तथा पाँचवें में भी यही जानना चाहिए। छटवें से बारहवें तक केवलज्ञान के बिना; चार सुज्ञान तथा तेरहवें, चौदहवें गुणस्थान में एक केवलज्ञान पाया जाता है।

इस प्रकार गुणस्थानों में ज्ञान का कथन जगदीश्वर ने किया, अब संयम रचना कहूँगा जो सूत्र भाषी जिनेन्द्र भगवान ने कही है।

पहले से चौथे गुणस्थान में एक असंयम ही जानना चाहिए। पाँचवें में देशसंयम, छटवें, सातवें में सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि। आठवें- नौवें में परिहारविशुद्धि के बिना दो संयम। दसवें में सूक्ष्मसाम्पराय तथा ग्यारहवें गुणस्थान से अयोग केवली तक एक यथाख्यात संयम ही जानना चाहिए। ये संयम अधिक-अधिक सुख को देने वाले हैं।

पहले-दूसरे गुणस्थान में चक्षु-अचक्षु दर्शन, तीसरे से बारहवें गुणस्थान तक अवधिदर्शन सहित तीन दर्शन तथा तेरहवें, चौदहवें गुणस्थान में एक केवल दर्शन ही पाया जाता है।

पहले से चौथे गुणस्थान तक छहों लेश्या, पाँचवें, छटवें, सातवें में पापों को हरने वाली तीन शुभ लेश्याएँ पुनः आठवें से सयोगकेवली तक शुक्ल लेश्या कही है तथा चौदहवें गुणस्थान में सभी लेश्याओं का नाश करके सिद्ध पद को प्राप्त कर लेते हैं।

पहले गुणस्थान में भव्य और अभव्य दोनों, दूसरे से चौदहवें में एक भव्य जीव ही रहते हैं। तीन गुणस्थानों के जो नाम हैं, उन-उन गुणस्थान में वही सम्यक्त्व रहते हैं।

चौथे, पाँचवें, छटवें, सातवें गुणस्थान में क्षायिक, उपशम और वेदक। आठवें से ग्यारहवें तक उपशम, क्षायिक दो तथा शेष गुणस्थानों में एक क्षायिक सम्यक्त्व ही पाया जाता है।

मिथ्यात्व गुणस्थान में सैनी-असैनी दोनों तथा दूसरे से चौदहवें गुणस्थानों में एक सैनी जीव ही सुख पाते हैं।

सवैया, तेइसा

पहिले दूजे हार-अनाहारक, तीजे हारक चौथे दोय।
पञ्चमतैं बारम लग हारक, तेरम हार-अनाहारक होय॥
चौदम एक अनाहार गनीजे, गुनठाना चौदह इमि लोय।
पहिले जीवसमास सकल हैं, शेषन में त्रस और न कोय॥
पर्यापति चौदम लग षट् ही, प्राण बारवें लग दस जान।
तेरम वच-तन श्वास-आयु चतु, चौदम एक आयु पहिचान॥
संज्ञा कहियत षट् लग चारों, सप्त-अष्ट त्रय हार न ठान।
नौमें मैथुन-परिग्रह दोनों, दसवें परिग्रह आगे हान॥

(सवैया, तेइसा अनुवाद)

पहले-दूसरे गुणस्थान में आहारक-अनाहारक दोनों, तीसरे में एक आहारक, चौथे में आहारक-अनाहारक दोनों, पाँचवें से बारहवें तक एक आहारक, तेरहवें में दोनों तथा चौदहवें में एक अनाहारक ही होते हैं।

पहले गुणस्थान में सभी जीवसमास, शेष गुणस्थानों में एक त्रस; जीवसमास होता है।

पहले से चौदहवें गुणस्थान में छहों पर्याप्तियाँ तथा पहले से बारहवें गुणस्थान तक दस प्राण होते हैं।

तेरहवें गुणस्थान में वचन, काय, श्वासोच्छ्वास तथा आयु; ये चार, चौदहवें गुणस्थान में एक आयु प्राण जानना चाहिए।

पहले से छटवें गुणस्थान तक चारों संज्ञायें, सातवें-आठवें में आहार के बिना; तीन संज्ञायें, नववें में मैथुन, परिग्रह, दसवें में परिग्रह तथा इस गुणस्थान से आगे कोई भी संज्ञा नहीं पाई जाती है।

छप्पय

पहिले - दूजे दर्श, दोय कुज्ञान तीन हैं।
मिश्र माँहि त्रय दर्श, ज्ञान पुनि मिश्र तीन हैं।।
चतु-पन षट् विज्ञान, तीन शुभरूप बखानों।
षट्तैं द्वादश तईं, सप्त मनपर्यय जानों।।
तेरम-चौदम दोय हैं, केवल दर्शन - ज्ञान युत।
अब कहता हूँ ध्यान, सुनों तुम भक्ति भावयुत।।
पहिले - दूजे अष्ट, आर्त्त - रुद्दर के जोई।
मिश्र माँहि नव जान, धर्म का एक मिलोई।।
पुनि वृष के दुय भेद, मिलें जो चतु गुण-ठानों।
पञ्चम त्रय-वृष मिलें, इकादस सब पहिचानों।।

षट् आरत त्रय धर्म चऊ, सत चउ ग्यारम लग शुक्ल।
बारम-तेरम पुनि चौदमें, क्रमतैं शेष त्रिक शुकल ।।
पहिले पचपन कहे, अहारक-द्विक बिन जानों ।
पञ्च मिथ्यात जु बिना, दुतिय पच्चास बखानों ।।
तीजे मिश्र जु माँहि, तीन-चालीस बखानों ।
अव्रतगुण जिहि नाम, तुरिय चालीस-छह जानों ।।
योग-कषाय छ-बीस, अव्रत ग्यारह पञ्चम में ।
चौबीस योग-कषाय के, प्रमत्त गिनये सच में ।।
सप्तम - अष्टम गुण, - स्थान बाईस जु आस्रव ।
नवमें सोलह लये, दसम दस ग्यारह में नव ।।
बारहवें नव जान, तेरमें सप्त गनीजे ।
मन-वच के दुय दोय, औदारिक युगल सु लीजे ।।
कारमाण मिल सप्त ये, तेरम गुण में जानिये ।
पुनि चौदम में आस्रव नहीं, यह मन-वच उर आनिये ।।
चौरासी लख योनि, प्रथम गुण-ठाने सारी ।
दूजेंतैं चौ तईं, लाख-छब्बीस विचारी ।।
पञ्चम में नर-पशु, लाख-अट्ठारह जानों ।
षट्तैं चौदह तईं, मनुष लख-चौदह ठानों ।।
कुलकोडि प्रथम में जान सब, दूजतैं चतुलग चउ ।
पञ्चम नर-पशु सकल गन, आगे मानुष जान सउ ।।

(छप्पय अनुवाद)

पहले-दूसरे गुणस्थान में दो दर्शन, तीन कुज्ञान । तीसरे मिश्र गुणस्थान में भी तीन दर्शन, तीन मिश्र ज्ञान होते हैं ।

चौथे और पाँचवें गुणस्थान में तीन दर्शन, तीन सुज्ञान होते हैं ये, तीनों शुभरूप कहे गए हैं। छठवें से बारहवें तक चार सुज्ञान, तीन दर्शन जानना चाहिए । तेरहवें गुणस्थान में केवलदर्शन सहित केवलज्ञान; ये दो ही उपयोग होते हैं।

अब आगे जिन शासन के अनुसार ध्यान का वर्णन करते हैं । पहले और दूसरे गुणस्थान में चार आर्त्त और चार रौद्र; ये आठ ध्यान, मिश्र गुणस्थान में एक धर्म ध्यान को मिलाकर नौ ध्यान, चौथे गुणस्थान में चार आर्त्त और चार रौद्र, दो धर्म; ये दश ध्यान, पाँचवें गुणस्थान में तीन धर्म ध्यान मिलाने से ग्यारह ध्यान जानना चाहिए ।

छठवें में तीन आर्त्त, चार धर्म ध्यान, सातवें में चार धर्म ध्यान, आठवें से ग्यारह तक एक शुक्लध्यान फिर बारहवें, तेरहवें और चौदहवें में क्रम से एक-एक शुक्ल ध्यान जानना चाहिए ।

पहले गुणस्थान में आहारक-द्विक के बिना पचपन आस्रव, दूसरे में पाँच मिथ्यात्व कम करने से पचास आस्रव कहे गये हैं । तीसरे मिश्र गुणस्थान में तैंतालिस आस्रव । चौथे अव्रत गुणस्थान में छ्यालीस आस्रव जानना चाहिए । पाँचवें गुणस्थान में नौ योग और सत्तरा कषाय; ये छब्बीस तथा ग्यारह अविरति; ये तैंतीस आस्रव । छठवें गुणस्थान में ग्यारह योग, तेरह कषाय; ये चौबीस आस्रव । सातवें, आठवें गुणस्थान में नौ योग, तेरह कषाय; ये बाइस आस्रव । नौवें में

नौ योग, सात कषाय; ये सोलह आस्रव। दसवें में नौ योग, एक कषाय; ये दस आस्रव। ग्यारहवें, बारहवें में नौ योग के नौ आस्रव होते हैं तथा तेरहवें गुणस्थान में सात योग के; सत्य मनोयोग, अनुभय मनोयोग, सत्यवचन योग, अनुभयवचन योग, औदारिकमिश्र काययोग और कार्मण काययोग मिलाकर; ये सात योग जानना चाहिए। चौदहवें गुणस्थान में आस्रव नहीं है, ऐसी अयोग अवस्था को मन-वचन से हृदय में लाना चाहिए।

पहले गुणस्थान में सभी चौरासी लाख तथा दूसरे से चौथे गुणस्थान तक छब्बीस लाख योनियाँ कहीं गईं हैं। पाँचवें में मनुष्य, तिर्यञ्च की अठारह लाख, छठवें से चौदह तक मनुष्य सम्बन्धी चौदह लाख योनियाँ जानना चाहिए।

पहले गुणस्थान में एक-सौ साढ़े निन्यानवे लाख कुल कोडि। दूसरे से चौथे गुणास्थान तक चारों गति सम्बन्धी एक-सौ साढ़े आठ लाख कुल कोडि। पाँचवें गुणस्थान में मनुष्य और तिर्यञ्च सम्बन्धी साढ़े सत्तावन लाख कुल कोडि तथा इसके आगे एक मनुष्य सम्बन्धी चौदह लाख कुल कोडि ही जानना चाहिए।

दोहा

ये सब रचना पर तनीं, यामें तू नहि जीव।
तेरा दर्शन - ज्ञान गुण, तामें रहो सदीव॥

(दोहा)

हे आत्मन्! "ये सारी रचना दूसरों के लिए है"। इसमें तू नहीं है, तेरा तो ज्ञान और दर्शन गुण है सो सदा उसी में रहना चाहिए।

चौबीस दण्डक

दोहा

वन्दौं वीर सुधीर कों, महावीर गम्भीर ।
वर्धमान सन्मति महा, देवदेव अतिवीर ॥
गत्यागत्य प्रकाश के, गत्यागत्य व्यतीत ।
अद्‌भुत अतिगति सुगति जो, जैनसूर जगदीश ॥
जाकी भक्ति बिना विफल, गये अनन्ते काल ।
अगणित गत्यागति धरी, कटो न जग जञ्जाल ॥
चौबीसों दण्डक विषैं, धरी अनन्ती देह ।
नाँहीं लखियों ज्ञान-धन, शुद्ध स्वरूप विदेह ॥
जिनवाणी परसादतें, लहिये आतमज्ञान ।
दहिये गत्यागति सबैं, गहिये पद निर्वान ॥
चौबीसों दण्डकतनी, गत्यागति सुन लेव ।
सुनकर विरकत भाव धरि, चहुँगति पानी देव ॥

चौपइ

पहिलो दण्डक नारक तनों, भवनपती दस दण्डकभनों ।
ज्योतिष व्यन्तर सुरगति वास, थावर पञ्च महादुखरास ॥
विकलत्रय अरु नर-तिर्यञ्च, पञ्चेन्द्रिय धारक परपञ्च ।
ये चौबीसों दण्डक कहे, अब सुन लीजे भेद जु लहे ॥
नारक की गति आगति दोय, नर-तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय होय ।
जाय असैनी पहिले लगै, मन बिन हिंसा करम न पगै ॥
सरीसर्प दूजे लग जाँहि, तीजे लग पक्षी शक नाँहि ।
सर्प जाय चौथे लग सही, नाहर पञ्चम आगे नही ॥
नारी छट्टे लग ही जाय, नर अरु मच्छ सातवें थाय ।
ये तौ नरकतनी गति जान, अब आगति भाषी भगवान ॥

नरक सातवें को जो जीव, पशुगति ही पावे दुख दीव ।
और नारकी षष्ठ सदीव, दो गति पावें नर-पशु जीव ।।
छट्ठे को निकसो जु कदापि, सम्यक्त्वी होवे निष्पापि ।
पञ्चम को निकसो मुनि होय, चौथे के केवलि हूँ जोय ।।
तृतीय नरक को निकसो जीव, तीर्थङ्कर हूँ ह्वै जगदीव ।
ये नारक की गत्यागत्य, भाषी जिनवाणी में सत्य ।।
तेरह दण्डक देव निकाय, तिनके भेद सुनों मन लाय ।
नर-तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय बिना, औरन के सुरपद नहि गिना ।।
देव मरे गति पञ्च लहाय, भू जल तरुवर नर पशु काय ।
दूजे सुरग उपरले देव, थावर ह्वै न कहो जिनदेव ।।
सहस्रारतें ऊँचे सुरा, मरकर होवें निश्चय नरा ।
नर-पशु भोगभूमि के दोय, दूजे सुरग परे नहि होय ।।
जाँय नहीं यह निश्चय कही, देवनि भोगभूमि नहि लही ।
कर्मभूमियाँ नर अरु ढोर, इन बिन भोगभूमि नहि और ।।
जाँय न ताँतैं आगति सोय, गति इनकी देवन की होय ।
कर्मभूमियाँ तिर्यग्-सत्त, श्रावकव्रत धरि बारम गत्त ।।
सहस्रार ऊपर तिर्यञ्च, जाँय नहीं ये तजि परपञ्च ।
अव्रत सम्यक्ती नरमाय, बारमतैं ऊपर नहि जाय ।।
अन्यमती पञ्चाग्नी साध, भवनत्रिकतैं जाय न बाध ।
परिव्राजक दण्डी हैं जेह, पञ्चम परे नाँहि उपजेह ।।
परमहँस नामा परमती, सहस्रार ऊपर नहि गती ।
मोक्ष न पावे परमत माँहि,जैन बिना नहि कर्म नशाँहि ।।
श्रावक आर्य अणुव्रत धार, बहुरि श्राविकागण अविकार ।
अच्युतस्वर्ग परे नहि जाय, ऐसो भेद कहो जिनराय ।।
द्रव्यलिङ्ग धारी जे जती, नवग्रीवक आगे नहि गती ।
बाह्याभ्यान्तर परिग्रह होय, परतछ लिङ्ग निन्द्य है सोय ।।

पञ्च पञ्चोत्तर नव नवोतरा, महामुनी बिन और न धरा।
केई बार देव जिय भयो, पै केई पद नाँहीं लयो ॥
इन्द्र हुवो न शची हूँ भयो, लोकपाल कबहूँ नहि थयो।
लौकान्तिक हूवा न कदापि, अनुतर मँह पहुँचो न कदापि ॥
ये पद धरि अन पद नहि धरे, अल्पकाल में मुक्ति हि वरे।
है विमान सर्वारथ सिद्धि, सबतैं ऊँचो अतुल जु रिद्धि ॥
ताके ऊपर है शिवलोक, परे अनन्तानन्त अलोक।
गति-आगति देवन की भनी, अब सुनि लो मानुषगति तनी॥
चौबीसों दण्डक के माँहि, मनुष जाय यामें शक नाँहि।
मुक्ति हुँ पावे मनुष मुनीश, सकल धरा को ह्वै अवनीश ॥
मुनि बिन मोक्ष न पावे और, मनुष बिना नहि मुनि को ठोर।
सम्यग्दृष्टी जे मुनिराय, भवदधि उतरें शिवपुर जाय ॥
तहाँ जाय अविनश्वर होय, फिर जग में आवें नहि कोय।
रहे सासतें आतम माँहि, आतमराम भये शक नाँहि ॥
गति पच्चीस कही नरतनी, आगति पुनि बाईस हि भनी।
तेजकाय अरु वात जु काय, इन बिन और सवै नर थाय ॥
गति पच्चिस आगति बाईस, मनुषतनी भाषी जगदीश।
ता ईश्वर-सम आतमरूप, ध्यावे चिदानन्द चिद्रूप ॥
तो उतरे भव सागर भया, और न कोई शिवपुर लया।
ये सामान्य मनुष की कही, अब सुन पदवीधर की सही ॥
तीर्थङ्कर की आगति दोय, सुर नारकतैं आवे सोय।
फेर न गति धारे जग ईश, जाय विराजें जग के शीश ॥
चक्री अर्ध-चक्रि वा हली, स्वर्गलोकतैं आवें बली।
इनकी आगति एक हि कही, अब सुनिये जागति जू सही ॥
चक्री की गति तीन बखान, स्वर्ग नरक अरु मोक्ष सुथान।
तप धारे तो सुर शिव जाय, मरे युद्ध में नरक लहाय ॥

आखिर पावे पद निर्वान, पदवीधर ये पुरुष प्रधान ।
बलभद्दर की है जा-गती, सुरग जाय के ह्वै शिवपती ।।
तप धारें ये निश्चय भाय, मुक्तिपात्र सूत्रन में गाय ।
अर्धचक्रि को एक हि भेद, जाय नरक में लहे जु खेद ।।
समर माँहि यह निश्चय मरे, तद्भव मुक्तिपन्थ नहि धरे ।
आखिर पावे पद निर्वान, पदवीधारक बड़े सुजान ।।
इनकी आगति सुरगति जान, गति नरकन की कही बखान ।
आखिर पावें पद शिवलोक, पुरुष शलाका शिव के थोक ।।
ये पद पाय सु जग के जीव, अल्पकाल में ह्वै जगपीव ।
और हुँ पद कोई ना गहे, कुलकर नारद हूँ नहि लहे ।।
रुद्र भये ना मदन हुँ भये, जिनवर तात-मात नहि थये ।
ये पद पाय रुले नहि जीव, थोरे दिन में ह्वै शिवपीव ।।
इनकी आगति श्रुततैं जान, जागति रीति कहूँ जु बखान ।
कुलकर देवलोक ही जाय, मदन-मदन हरि ऊरध थाय ।।
नारद रुद्र अधोगति जाय, कलह कलङ्क महादुखदाय ।
जन्मान्तर पावें निर्वान, बड़े पुरुष ये सूत्र प्रमान ।।
तीर्थङ्कर के पिता प्रसिद्ध, स्वर्ग जाय कै होवें सिद्ध ।
माता स्वर्गलोक ही जाय, आखिर शिवसुख वेग लहाय ।।
ये सब रीति मनुज की कही, अब सुनि तिर्यग्गति की सही ।
पञ्चेन्द्री पशु मरण कराय, चौबीसों दण्डक में जाय ।।
चौबीसों दण्डकतैं मरे, पशू होय तो हानि न परे ।
गति-आगति वरणी चौबीस, पञ्चेन्द्री पशु की जगदीश ।।
ता परमेश्वर को पथ गहो, चौबीसों दण्डक को दहो ।
विकलत्रय की दस ही गती, दस आगति भाषी जिनपती ।।

थावर पञ्च विकलत्रय तीन, नर-तिर्यञ्च पञ्चेन्द्री लीन ।
इन ही दस में उपजे आय, इन ही तैं विकलत्रय थाय ।।
नारक बिन दण्डक है जोय, पृथ्वी पानी तरुवर होय ।
तेज वायु मरि नव में जाय, मनुष्य होय नहि सूत्र कहाय ।।
थावर पञ्च विकलत्रय ढोर, ये नवगति भाषी मदमोर ।
दसतें आय तेज अरु वाय, होय सही गावें जिनराय ।।
ये चौबीसों दण्डक कहे, इनको त्याग परमपद लहे ।
इनमें रुले सो जग को जीव, इनसे तिरे सो त्रिभुवन पीव ।।
जीव ईश में और न भेद, ये कर्मी वे कर्म उछेद ।
कर्मबन्ध जौलों जगजन्त, नाशत कर्म होय भगवन्त ।।

दोहा

मिथ्या अव्रत जोग अरु, मद परमाद कषाय ।
इन्द्री विषय जु त्यागिये, भ्रमण दूर हो जाय ।।
जिन बिन गति बहुतैं धरी, भयो नहीं सुलझार ।
जिन मारग उर धारिकैं, लहिये भवदधि पार ।।
जिन भज सब परपञ्च तज, बड़ी बात है येह।
पञ्च महाव्रत धारिकैं, भवजलकों जल देह ।।
अन्तःकरण जु शुद्ध ह्वै, जिनधरमी अभिराम ।
भाषा भविजन कारणें, भाषी "दौलतराम" ।।

चौबीस-दण्डक

वीर, सुधीर, महावीर, गम्भीर, वर्धमान, सन्मति, देवाधिदेव, अतिवीर को नमस्कार कर; गति-आगति से रहित आश्चर्यजनक सुगति को प्राप्त करने के लिए जैन-सूर, जगदीश ने गति-आगति पर प्रकाश डाला है ।

जिसकी भक्ति किए बिना; अनन्त काल व्यर्थ गवाँ दिए। असंख्यात गतियों को धारण करने के बाद भी जग का जञ्जाल नहीं कटा अर्थात् संसार के बन्धन से मुक्त नहीं हो पाये। इन चौबीस स्थानों में अनन्त शरीर धारण किए, परन्तु शुद्ध चैतन्य स्वरूपी देह से रहित करने वाले, ज्ञानरूपी धन को आज तक नहीं देखा। अब जिनवाणी की कृपा से आत्मज्ञान को प्राप्त कर; गति-आगति का नाश करके निर्वाण पद को प्राप्त करिए।

अब चौबीस दण्डक के मध्य गति-आगति सुनिये। इसे सुनकर विरक्ति भाव को धारण कर चारों गतियों से रहित हो जाइए।

(चौपई)

पहला दण्डक नरक को आदि करके, भवनवासियों के दस, ज्योतिष-व्यन्तर-वैमानिक; ये तीन, पञ्चस्थावर के पाँच; महाकष्ट प्रद हैं। विकलत्रय के तीन, मनुष्य और पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के दो, महाकष्ट को देने वाले प्रपञ्च रूप; ये चौबीस स्थान कहे गए हैं। अब इनके भेद सुनिये अर्थात् गति-आगति का विशेष वर्णन सुनिए।

नारकियों की गति और आगति दो ही होती हैं अर्थात् मनुष्य और पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च ही नरक जाते हैं तथा नरक से आकर भी मनुष्य और पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च ही होते हैं।

असैनी पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च; पहले नरक तक ही जाते हैं, क्योंकि मन के बिना हिंसा कर्म में अधिक प्रवृत्ति नहीं

होती है। पक्षी; तीसरे नरक तक। सर्प; चौथे नरक तक। सिंह; पाँचवें नरक तक। स्त्री; छटवें नरक तक तथा मनुष्य एवं मच्छ; सातवें नरक तक जाते हैं।

यह नरक जाने वालों की गतियाँ कहीं, अब नारकियों की आगति जिनेन्द्र भगवान कहते हैं । सातवें नरक से निकलकर दुखकारी तिर्यञ्च गति तथा छटवें नरक से निकले जीव; तिर्यञ्च और मनुष्य गति ही पाते हैं । छटवें नरक से निकले; सम्यक्त्वी तथा देशव्रती । पाँचवें नरक से निकलकर; मुनि । चौथे से निकलकर; केवली तथा तीसरे से निकलकर; तीर्थङ्कर भी हो सकते हैं। ये जिनवाणी में नरकों की गति- आगति कही है।

देवों के तेरह दण्डक कहे हैं, अब एकाग्रचित होकर सुनो। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और मनुष्य के बिना, कोई और देव गति को प्राप्त नहीं कर सकता है तथा देवों की, मरने के बाद; पृथ्वी, जल, वनस्पति, मनुष्य और तिर्यञ्च, ये पाँच गति होती हैं। दूसरे स्वर्ग से ऊपर के देव; स्थावर नहीं होते हैं, ऐसा जिनेन्द्र भगवान ने कहा है । सहस्त्रार स्वर्ग से ऊपर के देव मरकर निश्चय से मनुष्य ही होते हैं ।

भोगभूमि के मनुष्य तथा तिर्यञ्च; दूसरे स्वर्ग से ऊपर नहीं जाते तथा देव मरकर भोगभूमि को प्राप्त नहीं होते हैं, उनकी दो ही गति होती हैं। कर्मभूमियाँ मनुष्य-तिर्यञ्चों के अतिरिक्त और कोई भोगभूमि नहीं जाता, इसलिये इनकी आगति दो तथा गति एक; देव गति ही होती है। कर्मभूमियाँ

सम्यक्त्वी तिर्यञ्च, श्रावक के बारहव्रतों को धारण कर बारहवें स्वर्ग तक जाता है। इसी प्रकार अविरतसम्यग्दृष्टि मनुष्य भी बारहवें स्वर्ग से ऊपर नहीं जाते हैं। अन्य मतावलम्बी पञ्चाग्नि तपस्वी, भवनत्रिक से ऊपर नहीं जाते हैं। इसी प्रकार परिव्राजकदण्ड़ी पाँचवें से ऊपर, परमहँसी नामक अन्यमती सहस्त्रारस्वर्ग के ऊपर उत्पन्न नहीं होते हैं।

जैन धर्म को धारण किए बिना कर्म नाश नहीं हो सकते, इसलिए अन्य मतावलम्बी मोक्ष प्राप्त नहीं कर पाते। अणुव्रतों को धारण करने वाले; आर्य अर्थात् उत्कृष्ट श्रावक-श्राविका तथा अविकार अर्थात् आर्यिका; सोलहवें स्वर्ग के ऊपर नहीं जाते हैं, ऐसा भेद जिनेन्द्र भगवान ने कहा है। द्रव्यलिङ्ग को धारण करने वाले यतियों की गति नववें ग्रैवेयक के आगे नहीं हैं। जिनके बाह्य-आभ्यन्तर परिग्रह होता है, वह लिङ्ग प्रत्यक्ष निन्दनीय है।

पाँच अनुत्तर तथा नौ अनुदिश में महामुनियों के बिना और कोई नहीं जाता है। इसमें भी यह जीव कई बार देव तो हुआ, लेकिन वह इनमें से इन कई पदों को नहीं प्राप्त कर सका।

इन्द्र, शचि, लोकपाल, लौकान्तिक देव, कभी नहीं हुआ और न कभी भी अनुत्तर में पहुँचा, अतुल रिद्धि वाले पाँचवें अनुत्तर विमान सर्वार्थसिद्धि भी नहीं गया, क्योंकि इन पदों को धारण करने के बाद; अन्य पदों को धारण किए बिना ही अल्प काल में मोक्ष प्राप्त कर लेता है। सर्वार्थसिद्धि के ऊपर शिवलोक और शिवलोक के आगे अनन्तानन्त

लोकाकाश है। इस प्रकार देवों की गति-आगति कही, अब आगे मनुष्यों की गति सुनिए।

मनुष्य चौबीसों दण्डकों मे जाते हैं, मुक्ति भी मनुष्य ही प्राप्त करते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

मनुष्य के बिना और कोई भी मोक्ष प्राप्त नहीं करता और मनुष्य के बिना कोई मुनि बन नहीं सकता है। जो सम्यग्दृष्टि मुनिराज हैं, वे संसार-समुद्र से पार होकर शिवपुर को प्राप्त करते हैं। वहाँ जाकर अविनश्वर पद को प्राप्त करते हैं फिर कभी संसार में नहीं आते हैं, अपनी आत्मा में लीन होकर आतम राम बन जाते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

इस प्रकार मनुष्य की गति तो पच्चीस होती है, परन्तु आगति बाईस ही कही गई हैं। अग्निकाय और वायुकाय छोड़कर शेष सभी, मनुष्य गति को प्राप्त कर लेते हैं। इस प्रकार मनुष्यों की गति पच्चीस, आगति बाइस; जिनेन्द्र भगवान ने कही हैं।

ईश्वर के समान चिदानन्द, शिवरूप आत्म स्वरूप का ध्यान करने से भवसागर से पार हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त और किसी प्रकार शिवपुर को प्राप्त नहीं किया जा सकता। ये तो सामान्य मनुष्य की गति-आगति कही, अब पदवी धारी मनुष्यों की गति-आगति सुनिए।

तीर्थङ्करों की देव और नरक; ये दो ही आगति होती हैं तथा तीर्थङ्कर दूसरी गति को धारण न करके, उसी गति से लोक के शीर्ष पर विराजमान हो जाते हैं।

चक्रवर्ती की स्वर्ग, नरक और मोक्ष; ये तीन गति कही गई हैं। तप धारण करते हैं तो स्वर्ग या मोक्ष जाते हैं और यदि युद्ध में मरते हैं तो नरक गति प्राप्त करते हैं, परन्तु ये सभी पदवी धारी पुरुष मोक्षगामी ही होते हैं।

बलभद्रों की स्वर्ग और मोक्ष; दो ही गति होती हैं, तप धारण करते हैं तो निश्चय ही मोक्ष जाते हैं, इन मुक्ति पात्रों को सूत्र ग्रन्थों में गाया है।

अर्ध-चक्री; एक नरक गति में दुख पाते हैं, क्योंकि ये निश्चितरूप से युद्ध भूमि में मरते हैं, इसलिए इस भव में मोक्ष नहीं जाते, परन्तु ये पदवीधारी भी बाद में निर्वाणपद को प्राप्त कर लेते हैं। इस पदवीधारी पुरुषों की आगति देव गति जानना चाहिए, परन्तु गति; नरक ही कही हैं, लेकिन अन्त में सभी तिरेषठ शलाका पुरुष शिवलोक ही जाते हैं।

जो संसारी जीव इन पदों को प्राप्त कर लेते हैं, वे अल्पकाल में संसार-समुद्र को पार कर लेते हैं।

इनके अतिरिक्त और भी कई पद इस जीव ने प्राप्त नहीं किए। **जैसे**- कुलकर, नारद, रुद्र, कामदेव तथा तीर्थङ्कर के माता-पिता कभी नहीं बना, क्योंकि इन पदों को प्राप्त करने के बाद; जीव संसार में नहीं रुकता और अल्पसमय में ही मोक्ष प्राप्त कर लेता है, इनकी आगति आगम से जान लेना चाहिए।

अब गति यहाँ पर कही जा रही है। कुलकर देवलोक ही जाते हैं। कामदेव और बलभद्र भी मदन को मारकर अर्थात्

तपस्या कर स्वर्ग या मोक्ष को जाते हैं। कलह प्रिय नारद और कलङ्कित रुद्र; नरक गति में जाते हैं, लेकिन भवान्तर जन्म में मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं। ये सभी श्रेष्ठ पुरुष सूत्रों में प्रमाणित हैं।

तीर्थङ्कर के पिता; स्वर्ग या मोक्ष जाते हैं। माता; स्वर्ग जाकर पुनः मनुष्यभव प्राप्त कर शीघ्र ही मोक्ष प्राप्त कर लेती है। यह मनुष्यों की आगति कही। अब तिर्यञ्चों की गति-आगति सुनिए—

पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च मरण कर चौबीसों दण्डक में जाता है तथा चौबीसों दण्डकों से मरण कर तिर्यञ्च होने में कोई बाधा नहीं हैं, इस प्रकार जिनेन्द्र भगवान ने पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चों की गति-आगति का वर्णन किया है। इन चौबीसों दण्डकों का अन्त कर परमेश्वर का पद प्राप्त करना चाहिए।

विकलत्रयों की दस गति होती हैं और आगति भी जिनेन्द्र भगवान ने दस कही हैं। ये पाँच स्थावर, तीन विकलत्रय, मनुष्य और पञ्चन्द्रिय तिर्यञ्च; ये दस में ही उत्पन्न होते हैं और इन्हीं दस दण्डकों से विकलत्रय में जाते हैं।

नारक के बिना शेष दण्डक; पृथ्वी, जल, वनस्पति होते हैं। अग्नि कायिक, वायुकायिक मरकर; मनुष्य के बिना शेष नौ में जाते हैं, ऐसा सूत्र कहा है।

पञ्च स्थावर, तीन विकलत्रय और पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च; इनकी नौ ही गतियाँ कही गई हैं, परन्तु दसों स्थानों से आकर; तेज, वायुकाय हो सकते हैं।

इस प्रकार ये चौबीस दण्डक कहे हैं, जो इनको त्याग देते हैं, वह परम पद को प्राप्त कर लेते हैं। जो इसमें

रुलता है, वह संसारी जीव और जो इससे पार उतर जाता है, वह मुक्तजीव कहलाता है।

संसारी और मुक्त जीव में कोई अन्तर नहीं है, ये करम सहित हैं और वे करम रहित हैं। जब तक करम बन्ध है तब तक संसार है, कर्म बन्ध के नाश होते ही भगवान बन जाते हैं।

मिथ्यात्व, अविरत, योग, मद, प्रमाद, कषाय एवं इन्द्रिय विषय; इनको त्यागने से संसार भ्रमण दूर हो जाता है। जिसके बिना बहुत गतियों को धारण किया, लेकिन यह जीव संसार से सुलझ नहीं पाया, अतः जिनेन्द्र भगवान के मार्ग को अपना कर संसार-सागर को प्राप्त कर लीजिए।

यही सबसे बड़ी बात है कि सभी प्रपञ्चों को छोड़कर जिनेन्द्र भक्ति में लीन होकर, पञ्चमहाव्रतों को धारण कर संसार-समुद्र को जलाञ्जलि दे देना चाहिए।

जिनधर्म के माध्यम से भव्यजीवों का अन्तःकरण शुद्ध होता है, ऐसी भाषा पण्डित दौलतराम जी ने कही है।

चौदह गुणस्थानों में मार्गणाएँ

गति- नरकगति की सातों पृथ्वियों में; पहले के चार गुणस्थान होते हैं। प्रथम पृथ्वी के पर्याप्त, अपर्याप्त में (अवस्था में) मिथ्यात्व और असंयत सम्यग्दृष्टि; ये दो गुणस्थान होते हैं, शेष छः पृथ्वियों में अपर्याप्त अवस्था में एक मिथ्यात्व गुणस्थान ही होता है।

तिर्यञ्चगति- तिर्यञ्चों के पर्याप्तक अवस्था में आदि के पाँच गुणस्थान तथा अपर्याप्त अवस्था में मिथ्यादृष्टि, सासादन और असंयत सम्यग्दृष्टि; ये तीन गुणस्थान होते हैं।

अपर्याप्तक अवस्था में तिर्यञ्चनियों के मिथ्यात्व और सासादन; ये दो ही गुणस्थान होते हैं, क्योंकि सम्यक्त्व सहित जीव; द्रव्यस्त्रियों में उत्पन्न नहीं होता।

मनुष्यगति- पर्याप्त मनुष्यों के चौदह तथा अपर्याप्त मनुष्यों में मिथ्यात्व, सासादन और असंयत सम्यग्दृष्टि; ये तीन गुणस्थान हैं।

भावलिङ्ग की अपेक्षा से मनुष्यनियों में पर्याप्त अवस्था में चौदह गुणस्थान होते हैं, क्योंकि द्रव्यलिङ्ग की अपेक्षा से स्त्रियों के मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र, अविरत और देशविरत; ये पाँच गुणस्थान ही होते हैं।

सम्यक्त्व सहित जीव; भाव एवं द्रव्य दोनों ही स्त्रीवेद में उत्पन्न नहीं हो सकता, अतः अपर्याप्त अवस्था में स्त्रीवेद के मिथ्यात्व और सासादन; ये दो ही गुणस्थान होते हैं। अपर्याप्तक मनुष्यों और तिर्यञ्चों में एक मिथ्यात्व गुणस्थान ही होता है।

देवगति- भवनत्रिक में पर्याप्तक अवस्था में आदि के चार तथा अपर्याप्तक में मिथ्यात्व और सासादन; ये दोनों गुणस्थान होते हैं।

भवनत्रिक और सौधर्म, ईशान स्वर्ग की सभी देवियों में पर्याप्त अवस्था में आदि के चार गुणस्थान तथा अपर्याप्त अवस्था में मिथ्यात्व और सासादन; ये दो गुणस्थान होते हैं।

सौधर्म, ईशान से नवग्रैवेयक तक के पर्याप्तकों में मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र और असंयत सम्यग्दृष्टि; ये चार गुणस्थान तथा अपर्याप्तक अवस्था में मिथ्यात्व, सासादन, असंयत सम्यदृष्टि; ये तीन गुणस्थान होते हैं।

अनुत्तर एवं अनुदिश के पर्याप्त, अपर्याप्त दोनों ही अवस्था में एक असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान ही रहता है, क्योंकि इसमें सम्यग्दृष्टि ही जाते हैं।

इन्द्रिय- एक, द्वि, त्रि, चौ इन्द्रियों और असंज्ञी पञ्चेन्द्रियों में एक मिथ्यात्व गुणस्थान ही होता है। संज्ञी पञ्चेन्द्रियों में चौदह गुणस्थान होते हैं ।

काय - पृथ्वीकायादि से वनस्पति कायिक तक एक मिथ्यात्व गुणस्थान ही होता है। त्रयकायिकों में चौदह गुणस्थान होते हैं ।

योग - सत्य मनोयोग, अनुभय मनोयोग, संज्ञी मिथ्यादृष्टि से लेकर तेरहवें गुणस्थान तक होता है। असत्य मनोयोग और उभय मनोयोग संज्ञी मिथ्यादृष्टि से लेकर बारहवें गुणस्थान तक होते हैं। अनुभय वचन योग; दो इन्द्रिय से तेरहवें गुणस्थान तक। सत्य वचन योग संज्ञी मिथ्यादृष्टि से तेरहवें गुणस्थान तक । असत्यवचन योग और उभय वचन योग में संज्ञी मिथ्यादृष्टि से लेकर बारहवें तक गुणस्थान होते हैं।

औदारिक काययोग में मिथ्यात्व से लेकर तेरहवें गुणस्थान (सयोगकेवली तक) होते हैं। औदारिकमिश्र काययोग में मिथ्यादृष्टि, सासादन सम्यग्दृष्टि, असंयत सम्यग्दृष्टि और सयोगकेवली; ये चार गुणस्थान होते हैं ।

वैक्रियिक काययोग में मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र और असंयत सम्यग्दृष्टि; ये चार गुणस्थान होते हैं। वैक्रियि-कमिश्र काययोग में; इन चार गुणस्थानों में से मिश्र गुणस्थान

के बिना तीन गुणस्थान होते हैं, क्योंकि तीसरे गुणस्थान में मरण नहीं होता। जब तक पर्याप्तियों की पूर्णता नहीं तब तक ही वैक्रियिकमिश्र काययोग होता है ।

आहारक काययोग और आहारकमिश्र काययोग में एक प्रमत्त संयत गुणस्थान ही होता है।

कार्मण काययोग में मिथ्यात्व, सासादन, असंयत सम्यग्दृष्टि और सयोगकेवली; ये चार गुणस्थान होते हैं । **अयोग केवली के एक चौदहवाँ गुणस्थान ही होता है ।**

वेद - स्त्रीवेद, पुरुषवेद में असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय से लेकर अनिवृत्तिबादर साम्पराय तक नौ गुणस्थान होते हैं ।

नपुंसक वेद में एकेन्द्रिय से अनिवृति बादरसाम्पराय तक नौ गुणस्थान होते हैं। चारों ही गुणस्थानों में नारकी शुद्ध नपुंसक वेदी (द्रव्य-भाव से) हैं अर्थात् नपुंसक ही होते हैं और एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय पर्यन्त जीव भी नपुंसक होते हैं। असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय से लेकर पञ्चम गुणस्थान तक तिर्यञ्च; तीन वेद वाले होते हैं ।

मनुष्य; मिथ्यादृष्टि गुणस्थान से नवें गुणस्थान तक तीनों वेदी हैं, दसवें के ऊपर चौदह तक अपगत वेदी होते हैं । देवों में चारों ही गुणस्थानों में स्त्री, पुरुष; ये दो ही वेद होते हैं।

कषाय - क्रोध, मान, माया कषायों में एकेन्द्रिय आदि से नवें गुणस्थान तक हैं। लोभ कषाय एकेन्द्रिय से लेकर सूक्ष्मसाम्परायिक दसवें गुणस्थान तक है। दसवें के आगे सर्वगुणस्थानवर्ती जीव; कषाय रहित होते हैं।

ज्ञान - कुमति, कुश्रुतज्ञान में; एकेन्द्रिय से लेकर मिथ्यात्व और सासादन तक जीव रहता है।

कुअवधिज्ञान में पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तक ही होते हैं अपर्याप्तक नहीं, यह ज्ञान भी मिथ्यात्व, सासादन; ये दो गुणस्थान में होता है। तीन मिश्र ज्ञान; तीसरे गुणस्थान में होते हैं, क्योंकि तीसरा गुणस्थान दो तरह से बनता है। पहला, सादि मिथ्यादृष्टि कुअवधिज्ञानी जब पहले गुणस्थान से तीसरे गुणस्थान में जाता है तब तीसरे गुणस्थान में कुअवधिज्ञान होता है, लेकिन जो सुअवधिज्ञानी ऊपर चौथे आदि गुणस्थान से नीचे तीसरे गुणस्थान में आता है, उस अवधिज्ञानी के अवधि दर्शन सहित सुअवधिज्ञान तीसरे गुणस्थान में होता है। इसप्रकार तीसरे गुणस्थान में पहले से तीसरे गुणस्थान में जाने वाले के दो दर्शन; चक्षु-अचक्षु एवं तीन कुज्ञान होते हैं और चौथे आदि गुणस्थान से नीचे तीसरे गुणस्थान में आने वाले सुअवधिज्ञानी के अवधि दर्शन सहित तीन दर्शन एवं अवधिज्ञान सहित तीन ज्ञान होते हैं। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान; चौथे से बारहवें गुणस्थान तक होते हैं। मनः पर्ययज्ञान; प्रमत्तसंयत से बारहवें गुणस्थान तक होता है। केवलज्ञानी के सयोग और अयोग; ये दो गुणस्थान हैं।

संयम- सामायिक, छेदोपस्थापना; प्रमत्त से नवें गुणस्थान तक रहता है। परिहार विशुद्धि संयम में प्रमत्त, अप्रमत्त; ये दो ही गुणस्थान होते हैं, इसमें ये ज्ञात हो जाता है कि सप्तम गुणस्थान में भी प्रवृत्ति होती हैं। कुछ लोग सप्तम गुणस्थान में ध्यान ही मानते हैं, प्रवृत्ति नहीं मानते, यह सिद्धान्त ठीक नहीं है। खाते, पीते, सोते; सप्तम गुणस्थान भी होता है। हाँ; यह प्रवृत्ति स्वस्थान में ही होती है, सातिशय में तो ध्यान ही होता है। सूक्ष्मसाम्पराय संयम में एक दसवाँ

गुणस्थान होता है। यथाख्यात संयम में ग्यारहवें से चौदहवें तक चार गुणस्थान होते हैं। संयमासंयम में एक पाँचवाँ और असंयम में आदि के चार गुणस्थान होते हैं।

दर्शन- चक्षुदर्शन; चतुरिन्द्रिय के पहला गुणस्थान एवं पञ्चेन्द्रिय के; पहले से बारहवें गुणस्थान तक होते हैं, अचक्षु दर्शन; एकेन्द्रिय से चौइन्द्रिय तक पहला गुणस्थान तथा पञ्चेन्द्रिय के; पहले गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान तक होते हैं। अवधिदर्शन; तीसरे गुणस्थान एवं असंयम सम्यग्दृष्टि चौथे गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान तक तथा केवलदर्शन अन्त के तेरहवें एवं चौदहवें; इन दो गुणस्थानों में होता है।

लेश्या- आदि की तीन लेश्या में पहले से असंयत सम्यग्दृष्टि तक चार गुणस्थान। तेज, पद्मलेश्या मिथ्यादृष्टि से अप्रमत्त संयत तक, शुक्ल लेश्या संज्ञी मिथ्यादृष्टि से सयोगकेवली तेरहवें गुणस्थान तक, अयोगकेवली अलेश्या माने जाते हैं।

भव्य- भव्यत्व चौदह गुणस्थानों में और अभव्यत्व मात्र मिथ्यात्व गुणस्थान में ही पाया जाता है।

सम्यक्त्व - क्षायिक सम्यक्त्व में असंयत सम्यग्दृष्टि आदि से अयोगकेवली तक, वेदक सम्यक्त्व-असंयत सम्यग्दृष्टि से अप्रमत्त संयत; इन चार गुणस्थानों में होता है, औपशमिक सम्यक्त्व-असंयत सम्यग्दृष्टि से ग्यारहवें तक होता है।

मिथ्यात्व, सासादन सम्यक्त्व और मिश्र (सम्यक् मिथ्यात्व); ये अपने ही एक-एक गुणस्थान में होते हैं। नरक की प्रथम पृथ्वी में; असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान में क्षायिक, वेदक, औपशमिक; ये तीन सम्यक्त्व होते हैं। अन्य पृथ्वियों में वेदक, औपशमिक; ये दो सम्यक्त्व होते हैं।

तिर्यञ्चों के चतुर्थ गुणस्थान में क्षायिक, वेदक, औपशमिक सम्यक्त्व होते हैं।

संयमासंयम - गुणस्थान में क्षायिक को छोड़कर दो सम्यक्त्व होते हैं, क्योंकि क्षायिक सम्यग्दर्शन के साथ तिर्यञ्चायुबद्ध जीव भोगभूमि में ही उत्पन्न होते हैं । वहाँ पर देशव्रती अर्थात् संयमासंयम वाले जीव नहीं होते हैं, इसीलिए क्षायिक सम्यक्त्वी तिर्यञ्च के पंचम गुणस्थान नहीं होता है ।

तिर्यञ्चनियों- में चतुर्थ एवं पञ्चम; दोनों गुणस्थान-वर्तीनि के क्षायिक सम्यग्दर्शन नहीं होता है, क्योंकि सात प्रकृतियों की क्षपणा आरम्भ करने वाला, पुल्लिंग कर्मभूमियाँ मनुष्य ही होता है और वह मरकर पुल्लिंग में ही उत्पन्न होता है, स्त्रीलिङ्ग में नहीं ।

मनुष्यों में असंयम सम्यग्दृष्टि से अप्रमत्त गुणस्थानों में क्षायिक, वेदक और औपशमिक; ये तीनों सम्यक्त्व, आठवें से ग्यारहवें गुणस्थान तक उपशम और क्षायिक एवं बारहवें गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान तक क्षायिक सम्यक्त्व रहता हैं ।

भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिष्क देव और उनकी देवाङ्गनाओं में तथा सौधर्म, ईशान कल्पवासी की देवाङ्गनाओं में असंयत सम्यग्दृष्टियों के क्षायिक सम्यग्दर्शन नहीं होता है, शेष दो सम्यक्त्व होते हैं। (कल्पवासी देवों की देवाङ्गनाओं की उत्पत्ति; पहले-दूसरे स्वर्ग तक ही है) सौधर्म से उपरिम ग्रैवेयक तक औपशमिक, क्षायिक ओर क्षायोपशमिक; ये तीन सम्यग्दर्शन होते हैं।

अनुत्तर और अनुदिश विमानवासी देवों में क्षायिक और क्षायोपशमिक; ये दो सम्यग्दर्शन होते हैं, परन्तु जो उपशम श्रेणी में मरते हैं, उनके औपशमिक भी हो सकता है।

संज्ञी - संज्ञी जीव; मिथ्यादृष्टि से लेकर बारहवें तक हैं, असंज्ञी जीव का प्रथम गुणस्थान ही होता है। संज्ञी-असंज्ञी, इन दोनों के विकल्प से रहित जीवों में, सयोगी और अयोगी; ये दो गुणस्थान होते हैं।

आहारक - आहारक मार्गणा में मिथ्यात्व से सयोगीकेवली तक तेरह गुणस्थान होते हैं। अनाहारक अर्थात् विग्रहगति में मिथ्यात्व, सासादन और असंयत सम्यग्दृष्टि; ये तीन गुणस्थान तथा लोकपूर्ण और प्रतर समुद्घात अवस्था में सयोगकेवली और अयोगकेवली; ये दो गुणस्थान, ऐसे कुल पाँच गुणस्थान होते हैं। सिद्ध अवस्था गुणस्थानातीत है।

ग्रन्थ समाप्त

प्रज्ञा मुनि

परमागम स्तुति

शारदे ! शरद-सी शीतल, शुभ वाणी दे दो मुझे,
आपके द्वारे हम, भिक्षा लेने आये हैं ।
ज्ञान का प्रकाश करो, मोहतम नाश करो,
कण्ठ में विराजो मेरे, दीक्षा लेनें आये हैं ।
आपकी चतुर्भुज, चार अनुयोग धरें,
ज्ञान हंस-रूप भेद-, विज्ञान धारें हैं ।
ऐसी जिनवाणी मेरी-, आत्मा सुधार करे,
जिनके "अमित" बार, चरण पखारें हैं ॥ १ ॥

माता जिनवाणी तेरी, - स्तुति है बार-बार,
तार - तार हुई मेरी, चुँदरी सम्हार दे ।
आगम के शब्द-शब्द-, में हे ! मात दर्श तेरा,
वही दर्श आज निज-, पूत पे निशार दे !
यूँ तो मेरा जीवन ही, वाहन तुम्हारा मात !
प्यार दे ! निहार दे !, दुलार ! पुचकार दे !
हंसवाहिनी मैं तेरी-, गोद में पड़ा हुआ हूँ,
भाव को सुबोध दे !, निखार दे ! माँ शारदे ! ॥ २ ॥

प्रज्ञा श्रमण मुनि

शारदे नमस्कार-, करता हूँ बार - बार,
दीजिए समयसार, साथ में नियमसार !
ज्ञान का रयणसार, दे दो प्रवचनसार,
आत्मा का हो सुधार, करो मन में उजार ।
परम पदारथ सार, दे दो पञ्चास्तिकाय,
पाऊँ मैं भी बोध ऐसा, रक्षा करूँ षट्निकाय ।
ज्ञान निधि ऐसी पाऊँ, मन होवे निर्विकार,
''अमित'' नमस्कार-, करता हूँ बार-बार ।। ३ ।।

वागीश्वरि माता है तू, वचन विधाता है तू,
वचनों का वरदान, एक बार दीजिए ।
बढ़े तो विराग ऐसा, विषयों की वासना से,
बुद्धि से विकारों का, शमन कर दीजिए ।
बाँह मेरी थाम ले, बचा ले मुझे डूबने से,
विकथा के वन से, निकार मुझे लीजिए ।
वचन अथाह रूप, गये हैं जो टूट - फूट,
''अमित'' वचन का, सुधार कर दीजिए ।। ४ ।।

कहाँ-कहाँ बस गई, वर्ण चितेरी मात !
सुन्दर सलौने रूप, रस अरु गन्ध में ।
दोहा कहो चौपाई, काव्य कविता कहो,
गीत गान शायरी, गाथा अरु छन्द में ।

नानी की कहानी बैठी, नाना के भजन बैठी,
दादी की पहेली बैठी, कवियों के कण्ठ में ।
नाटक के नव रस, छोड़े नहीं तूने कभी,
आनके विराजो मेरे, "अमित" के मन में ॥ ५ ॥

वीतराग भाव तेरा, वीतराग वाणी तेरी,
वीतराग गाँव तेरा, वीतराग देश है ।
वीतराग जननी है, भव - वन तरणी तू,
वीतराग धर्म तेरा, वीतराग वेश है ।
वीतराग कुटिया, भवन तेरा वीतराग,
वीतराग महल, मकान वीतराग है ।
ऐसी वीतरागी माता, चरणों में नाऊँ माथा,
वीतरागी बन जाऊँ, "अमित" विराग है ॥ ६ ॥

भारती है नाम तेरा, तारती तू भव से फेरा,
आरती उतारूँ माता, सदा गुण गाऊँ मैं ।
भार को उतारो मेरे, कर्म चितारो मेरे,
पार उतारो मुझे, पास तेरे आऊँ मैं ।
भा गई तू भावों में, छा गई विचारों में तू,
आ रही है याद मुझे, अपने ख्यालों में,
ऐसा मुझे दे दो दान, करूँ अपना कल्याण,
जय हो "अमित" रूप, सबके ही नारों में ॥ ७ ॥

स्वप्न दिखाये बहु, तूने मात नींद आके,
साक्षात् आके अब, दर्श दे दीजिए ।
गिरे हैं जो भाव, पाप पङ्क में सने हुए हैं,
ऐसे निन्द्य भावों से, उत्कर्ष कर दीजिए ।
हार के जो बैठ गए, कर्मों की मार से जो,
जीत की खुशी का अब, हर्ष भर दीजिए ।
तेरे कर सर पै हों, मेरे झुके सर पै माँ !
मेरे मित भाव को "अमित" कर दीजिए ॥ ८ ॥

वीतराग नाथ तेरा, नहि तुझे राग करे,
इसलिए मात तू, कुमारी कहलाती है ।
चार गति दुःख से, सदा ही तू निवार करे,
भव्य जीव बोध के, कुमरण बचाती है ।
सेवा करो ज्ञानियों की, अज्ञजन बोध पाते,
ऐसा भाव तू तो मात, सदा सिखलाती है ।
मेरा भी तू कुमरण, मात ! बचा दे जग में,
"अमित" के बन्ध इक-, क्षण में छुड़ाती है ॥ ९ ॥

भारती सरस्वती है, शारदा है नाम तेरा,
विदुषी है माता, हंसगामिनी कहाती है ।
वागीश्वरि जगमाता, ब्रह्माणी है वरदा तू,
ब्राह्मणी है वाणी है तू, भाषा कहलाती है ।

ब्रह्मचारिणी है माता, बाल कुमारी है तू,
गौ है श्रुत देवी है तू, विद्या कहलाती है ।
इतने हैं नाम तेरे, काम तेरा एक ही है,
आनके "अमित" की, बुद्धि बस जाती है ॥१० ॥

ज्ञानियों के ज्ञान में तू, ध्यानियों के ध्यान में तू,
सङ्गीतों की तान में तू, आन के विराजी है ।
सुगतों की बुद्धि में तू, शिव जी की ऋद्धि में तू,
ब्रह्मा जी के ब्रह्म में तू, ज्ञान हो विराजी है ।
विष्णु की शान में तू, राम हनुमान में तू,
भिन्न-भिन्न मत के तू, मति में विराजी है ।
वैशेषिक सांख्य, चार्वाक मत जैनियों के,
"अमित" मतिमान, बन के विराजी है ॥ ११ ॥

उर नहि सुर नहि, वीणा नहि वाणी नहि,
राग नहि साज नहि, इतना गरीब हूँ ।
वर्ण नहि शब्द नहि, वाक्य नहि शास्त्र नहि,
पण्डित विद्वान ज्ञानी, कवि न सुरूप हूँ ।
सभा जैसा भेष नहि, मञ्च जैसा मान नहि,
आन-वान-शान के मैं, कहाँ से करीब हूँ ।
मैं तो तेरी भक्ति माँ, करता हूँ रात-दिन,
इसलिए माता मैं तो, "अमित" नसीब हूँ ॥१२॥

मन्त्र णमोकार इक, सिद्ध मन्त्र विश्व में है,
जिसने है विश्व की, - ऊँचाईयों को चूमा है ।
मन्त्र है विख्यात ऐसा, गुण-रूपी रत्न खानि,
जिसने है सिन्धु की, गहराईयों को ढूँढ़ा है ।
चार घाति कर्म नाश, - भये अरिहन्त प्रभो !
आठ कर्म नाश सिद्ध, - भये गये सिद्ध भूमि ।
शासन सु आचारज, पाठन सुपाठक भये,
साधु नमें साधना से, "अमित" निजानुभूति ॥१३॥

मंगल महान मन्त्र, ऋद्धि-सिद्धि ज्ञान-दाता,
चार रूप मंगल में, बनके समाता है ।
अरिहन्त सिद्ध साधु रूप, केवली की वाणी रूप,
भव-भव में मंगल हो के, सुख का प्रदाता है ।
उनका ही उत्तम रूप, चार भेद का स्वरूप,
निर्दोष पद का जो, मार्ग बतलाता है ।
इनकी ही शरणा से, कटते हैं पाप फंद,
भगते "अमित" भय, मोक्ष का प्रदाता है ॥१४॥

भारती है भानु के, समान दिव्य - तेज दाता,
अन्धकार तुझको, पसन्द नहीं आता है ।
पढ़ना औ लिखना भी, होता है प्रकाश में ही,
चिन्तन से चेतना का, द्वार खुल जाता है ।

न्याय-नीति आगम-, अध्यात्म का प्रकाश भरा,
ऐसा कोई शास्त्र न जो, तुझको न आता है।
ऐसे दिव्य - ज्ञान के, प्रकाश का प्रकाश दे माँ!
तू ही माता "अमित" की, भाग्य विधाता है ॥१५॥

सर-सर दौड़ती है, जल के समान माता,
छोटे-बड़े गढ्ढों को, भरे ही चली जाती है ।
सरवर - नदी - नाले, सूख जाते मोका पा-के,
हर पल बहती माता, दौड़ी चली आती है ।
बाँटती - उलीचती, खर्चा करे दिन - रात,
गणधर की बुद्धि भी तो, पार नहीं पाती है ।
ऐसा है अथाह रूप, सागर के समान रूप,
सरवर "अमित" रूप, सरस्वती कहाती है ॥१६॥

शारदे माँ! शर दे, विवेक और बुद्धि दे दो,
बढ़े-बढ़े लक्ष्य को भी, प्राप्त कर जाऊँ मैं ।
कुवादी के शर को मैं, शूरवीर बन के माता,
कविता के क्षेत्र में, परास्त कर डालूँ मैं ।
लक्ष्य मेरा बना रहे, आगम की रक्षा हेतु,
अनेकान्त धनुष को, हाथों में सम्भालूँ मैं ।
नय-नय तीर ले के, नये-नये लक्ष्य ले के,
"अमित" गति से सीधे, तीर चला दूँ मैं ॥१७॥

विदुषि है माता तू, विद्वानों की जनम - दाता,
जनम - जनम माता, साथ दे दीजिये ।
मिल जाये ज्ञान ऐसा, खर्चे न पाई - पैसा,
ऐसे ज्ञान - धन का, भण्डार भर दीजिये ।
राजा नहि छीने जिसे, चोर नहि लूटें जिसे,
रत्नों के भण्डार से न, कीमत चुकाते हैं ।
ऐसे ज्ञान-धन को मैं, बाँटू दिन-रात माता,
"अमित" से सिन्धु तुम्हें, शीश झुकाते हैं ॥१८॥

हंस-वाहिनी तू बन के, जल में चली निकल के,
मोतियों के दानें चुन के, हंस मन भाया है ।
नीर-क्षीर का विवेक, राग-द्वेष का न लेश,
ऐसा रूप माता तूने, प्रकृति से पाया है ।
हाथों में तू लेखनी का, रूप धरती है माता,
चलने में हंस - गति, रूप दर्शाया है ।
पाप पंक का न लेश, पंकज-सा पुञ्ज तेज,
"अमित" स्वरूप माता, ज्ञान का बनाया है ॥१९॥

वागीश्वरि-वाणी में तू, वचनों की रानी है तू,
वीणा के उन तारों में तू, सप्त स्वर दाता है ।
तबले की ताल में तू, ढ़ोलक की खाल में तू,
झुनझुन की झंकार में तू, स्वर भी सुहाता है ।

मंजीरे की चाल में तू, हाथों की करताल में तू,
बाँसुरी के नाद में तू, श्वास-सुर दाता है ।
वायु की बयार में तू, वर्षा की फुहार में तू,
झरनें के निनाद में तू,"अमित" रूप आता है ॥२०॥

जगमाता नाम तेरा, जिसने है मन से टेरा,
उसकी पुकार को माँ, शीघ्र सुन लेती है ।
बच्चा हो या बूढ़ा हो, यौवन से भरा हुआ हो,
सबकी पुकार में तू, उत्तर दे देती है ।
जैसे जिद्दी बालक को, माता देती मन-मार,
वैसे भद्र बालक को, मना-मना देती है ।
ऐसा ही है तेरा रूप, प्राणी मात्र हितकार,
"अमित" की माता बनके, माँग भर देती है ॥२१॥

ब्रह्माणी है ब्रह्मरूप, ब्रह्मा की भुजा स्वरूप,
चार भुजाधारी होके, लोक को बताया है ।
चार अनुयोग ज्ञान, देने वाली ब्रह्माणी तू,
चार गतिरूप में तू, रूप फैलाया है ।
नरकों में सम्यक्त्व रूप, पशुओं में व्रत रूप,
मनुजों में मोक्षरूप, देव मन भाया है ।
प्राणीमात्र करुणा पात्र, तेरे माता जग में है,
"अमित" का ब्रह्म माता, उसी में समाया है ॥२२॥

वरदा है सबकी माँ तू !, वरदान देती है तू,
वीरों में तू वीरज की, शक्ति भी बढ़ाती है ।
सबको है वर देती, मन नहि भेद लाती,
जिनने जैसा सोचा, वैसा भाव दर्शाती है ।
कन्या को है वर देती, वर को वधू है देती,
जोड़ा जोड़-जोड़ के तू, मेल मिलवाती है ।
देने वाली दाता है तू, लेने वाला पात्र मैं हूँ,
दाता-पात्र "अमित" का, पूरा भर जाती है ॥२३॥

ब्राह्मणी है ब्रह्म में, समायी है तू रूपधारी,
बाह्य में न रूप दिखे, समझ न आया है ।
बहुत बनाये रूप, भीतर में जाके माता,
ब्रह्म-ज्ञानियों ने ही तो, तेरा दर्श पाया है ।
विषय-विकारों में जो, भटक रहे हैं प्राणी,
उनने ही तेरे उस, स्वरूप को लजाया है ।
तू तो माता भोली-भाली, मेरी तो है करनी काली,
ऐसा जानकर भी माता, "अमित" निभाया है ॥२४॥

वाणी नाम नाम-माला, बनी है सहारे तेरे,
वर्ण - वर्ण वर्ग - वर्ग, बहुत बनाये हैं ।
वाक्य-वाक्य बुनकर, बन गये पाठ तेरे,
वाणी की ही बात से, विद्वान भी कहाये हैं ।

वाणी है सुरीली तो वो, वीणा का है काम करे,
वाणी है कटीली तो वो, वाण का स्वरूप है।
वाणी हि रामायण रूप, वाणी हि है महाभारत,
वाणी "अमित" अमृत-विष, औषधि-घावरूप है ॥२५॥

भाषा है तू भासमान, दिव्य-तेज ओज वाली,
सबको बताती है तू, उनकी ही भाषा में ।
महाभाषा अठारह जो, जग में लिपि स्वरूप,
लघु भाषा सात-सै हैं, बोल-चाल भाषा में ।
भाषा-भाषा भिन्न-भिन्न, भाव-भाव एक रूप,
जल आव् वाटर पानी, कहते हैं जहान में ।
कितने ही नाम रखो, काम सबका एक होता,
आग-प्यास को बुझाना, "अमित" जहान में ॥२६॥

ब्रह्मचारिणी है माता, ब्रह्म है निवास तेरा,
शुक्लभाव रूप तेरी, साटिका कहाती है ।
शिर-केश होकर भी, राग नहीं तेरा लेश,
विषयों की वासना से, अक्षों को बचाती है ।
मन तेरा रीता है, कषायों के कङ्कणों से,
संयम के श्रृंगार से तू, देह को सजाती है ।
तप तेरा घर-वर, त्याग तेरा अनुचर,
"अमित" अकिञ्चन भाव, भर-भर लाती है ॥२७॥

गौ के है समान भद्र, रक्षा करें नय सींग,
पूँछ के समान बाल-, लज्जा रखवाली है ।
चार थन चार वेद, दूध सबका एक-सा है,
रंग में असमान फिर भी, मधु-रस वाली है ।
वात्सल्य आपका, समान है त्रिलोक से ही,
इसीलिए गोवत्स, प्रीत-सी निहारी है ।
गौ-धन को गिनते हैं, जगत के मान में तो,
ज्ञान-धन आपका भी, "अमित" चितारी है ॥२८॥

श्रुत-देवी रूप तेरा, कर्णों के है सुनने से,
अङ्ग-बाह्य अङ्ग-प्रविष्ट, दो रूप जाना है ।
अङ्ग-बाह्य अनेक रूप, अङ्ग प्रविष्ठ बारह रूप,
इतने में पूरा श्रुत, भगवान ने बखाना है ।
द्रव्य-श्रुत भाव-श्रुत, दोनों के हैं भाव न्यारे,
द्रव्य-श्रुत अभव्य ग्यारह,- अङ्ग नव पूर्वधारें हैं ।
भाव-श्रुत की महिमा न्यारी, "तुषमांस भिन्न" रूप,
मित श्रुत ने भी तो, "अमित" भव्य तारें हैं ॥२९॥

विद्या है विशाल रूप, दर्पण-सा स्वरूप जिसमें,
शिक्षा अति सूक्ष्मरूप, सूत्रों का सहारा है ।
विद्या का विज्ञान भरा, झलकें जिसमें तीनों काल,
द्रव्य - गुण - पर्यायों का, दिखता किनारा है ।

लोक - अलोक को, देखा है प्रत्यक्ष जिसने,
ऐसी उस विद्या पै, मन मोहित हमारा है।
बलि-बलि जाऊँ ऐसी, विद्या के स्वरूप को मैं,
दे-दे तू "अमित" को, भव-सिन्धु का किनारा है॥३०॥

मंगल मन-वीणा

मन की वीणा पै झंकृत स्वरं मंगलं।
मंगलं, मंगलं, मंगलं, मंगलं.......॥टेक॥
सा - से सारे गमों को गवाँ दे, हे माँ!।
गम की दुनियाँ से हमको बचा ले, हे माँ!॥१॥
रे - से रेखा बदल सर-करों की, हे माँ!।
भाग्य का लेख सुन्दर तू रच दे, हे माँ!॥२॥
गा - से गाता रहूँ तेरी विरुदावली।
छन्द - गाथा बना के रचूँ शायरी॥३॥
मा - से ममता का आँचल मिले मुझको माँ!।
जिससे भय-दुख का दामन छुटे मेरी माँ!॥४॥
पा - से पाऊँ परम भाव परमात्मा।
होवे जिस भाव में पुण्य ना पाप ना॥५॥
धा - से धारण करूँ धर्म दशलक्षणी।
धार करके बनूँ मैं, हे माँ! सद्गुणी॥६॥
नि - से निस्सार संसार में न रमूँ।
पाके निर्वाण पद मैं "अमित" सुख चखूँ॥७॥
सा-रे-गा-मा-पा-धा-नि का स्वर मंगलं।
मंगलं, मंगलं, मंगलं, मंगलं.........॥८॥

अमित वाणी

ज्ञान के अनुपात को विवेक कहते हैं।

★★★★★★

ज्ञान की एकाग्रता को ध्यान कहते हैं।

★★★★★★

शक्तिशाली इन्द्र भी पुण्यवानों की सेवा करता है।

★★★★★★

अज्ञानियों से लड़ने की अपेक्षा अपने अज्ञान से लड़ें।

★★★★★★

भगवान बनने की शुरुआत भोजन शुद्धि से होती है।

★★★★★★

भय और आसक्ती से ऊपर उठने का नाम आनन्द है।

★★★★★★

अच्छे कार्य स्वयं में प्रशंसनीय होते हैं,
अतः हमें किसी से प्रशंसा की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

★★★★★★

किसी की उदारता का दुरुपयोग
नहीं करना ही ईमानदारी है।

★★★★★★

समय, श्रम, सम्पदा और संक्लेश
की बचत करना एम.बी.ए.है।

★★★★★★

जो मूर्ख को चुप करादे एवं
विद्वान को बुलवादे, वह बुद्धिमान् है।

★★★★★★

जो अपने अज्ञान को ज्ञान रूप प्रदर्शित करता है,
वही सबसे बड़ मूर्ख है।

★★★★★★

देरी में धैर्यता एवं जल्दवाजी में
अपनी शक्ति-प्रतिभा का प्रदर्शन होता है।

★★★★★★

हमारा अज्ञान और प्रमाद; किसी की उन्नति में
बाधक नहीं बनना चाहिए।

★★★★★★

पाप करने वाले को पापी कहते हैं,
पुण्य कार्य को रोकने वाले को दुष्टी कहते हैं।

★★★★★★

जिसके बिना न रहा जाए, वह राग है।
राग को सामने रखकर कूटना वैराग्य है।

★★★★★★

पाप और पाप क्रिया को छोड़ना व्रत है,
पुण्य और पुण्य क्रिया को छोड़ना वैराग्य है।

★★★★★★

यूजलेस को यूजफुल बनाने का नाम साइन्स है,
बने हुये को बिगाड़ने का नाम फैशन है।

★★★★★★

जो पाप से सञ्चित किया जाता है, वह परिग्रह है।
जो पुण्य से प्राप्त होती है, वह सम्पदा है।

★★★★★★

प्रज्ञाश्रमण मुनि

पाप करने में जितना पाप नहीं है, उससे कई गुना पाप
किसी को पुण्य कार्य करने से रोकने में है।

★★★★★★

यदि तुम अपने दोष; गुरु से छिपाते हो तो सारी दुनियाँ में
तुम्हें दोषी सिद्ध करने से कोई रोक नहीं सकता है।

★★★★★★

यदि तुम अपने दोष; मात्र गुरु को बताते हो तो सारी दुनियाँ
के लोग मिलकर भी तुम्हें दोषी सिद्ध नहीं कर सकते हैं।

★★★★★★

आत्म हित के लिये मेरी आत्मा है,
किन्तु मेरे आत्म हित में वे ही साधक हैं,
जिन्होंने अपना आत्म हित कर लिया है।

★★★★★★

पाप के उदय में पाप करना सरल है,
पुण्य के उदय में पाप करना ज्यादा सरल है,
किन्तु पुण्य के उदय में पुण्य करना सबसे ज्यादा कठिन है।

★★★★★★

अपने आप को जानने से पहले
उन्हें जानो जिन्होंने अपने आप को जान लिया है।

★★★★★★

अपने शरीर में रहकर, जिन्दा रहना आश्चर्य नहीं है।
अपने शरीर से मरकर भी दूसरों के शरीर में युगों-युगों
तक जिन्दा रहना आश्चर्य की बात है।
जैसे - जिनेन्द्र भक्त मेंढ़क,

★★★★★★

पुण्य को पाप मानकर छोड़ना सरल है,
किन्तु पाप को पाप मानकर छोड़ना अत्यन्त कठिन है।

★★★★★★

संसार का मुझे डर नहीं लगता,
क्योंकि संसार को मैंने अपने अन्दर से निकाल दिया है।

★★★★★★

किसी के व्यवहार के पीछे हम;
अपना परमार्थ क्यों बिगाड़ें ?

★★★★★★

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र एवं तपरूप सम्पदा को
इस भव से परभव में ले जाने की
सम्यक् विधि का नाम सल्लेखना-समाधि है।

★★★★★★

''सो वाणी मस्तक धरौं''
अपनी अकल-दिमाग शास्त्र में मत लगाओ,
शास्त्र को अपनी अकल-दिमाग में लगाओ।

★★★★★★

नेकी कर कुएँ में डाल,
यदि नेकी को तुमने कुएँ में नहीं डाला
तो वह नेकी तुझे कुएँ में डाल देगी,
क्योंकि नेकी का फल हमेशा वदी होता है।

★★★★★★

अपनत्व में अधिकार की भाषा होती है।
ईर्ष्या में द्वेष की भाषा होती है।

★★★★★★

अच्छाई खो जाए, तसल्ली हो जाए,
इसी का नाम तपस्या है।

★★★★★★

विषय कषायों के कारण प्राणी ढीट होते हैं,
लेकिन धर्म के कारण प्राणी दृढ़ होते हैं।

★★★★★★

संसार; स्वप्न के समान है,
आँख खुली तो वह गया, आँख बन्द हुई तो यह गया।

★★★★★★

जो अपने में जीते हैं, उन्हें कोई नहीं हरा सकता है।

★★★★★★

संतोष की सीमा; श्वास बराबर होती है।

★★★★★★

उत्तम विचारों के बीज से
उत्तम व्यक्तित्त्व के वृक्ष उगते हैं एवं
उनमें उत्तम कृतित्त्व के फल लगते हैं।

★★★★★★

संसार का सुख; अपवित्र शरीर के
स्पर्श से उत्पन्न होता है।

★★★★★★

सरल व्यक्ति कठोर हो सकता है,
किन्तु क्रूर कभी नहीं हो सकता है।
क्रूर व्यक्ति सरल हो सकता है,
किन्तु दयावान, क्षमावान कभी नहीं हो सकता है।

★★★★★★

कर्म का भय; कुत्ते और बन्दर जैसा होता है।

★★★★★★

कर्म के उदय से भयभीत मत हो,
कर्म के उदय के सामने खड़े रहने पर,
कर्म भयभीत होकर भाग जाता है।

★★★★★★

न्याय और नीति एक ही सिक्के के दो पहेलू हैं,
इस एक ही सिक्के से विश्व का
समस्त वैभव खरीदा जा सकता है।

★★★★★★

हमारा प्रमाद; अहिंसा की हिंसा करता है।

★★★★★★

पंथों में पूजा गई, दान गया स्वाध्याय।
पंचों का शासन चले, धर्म कहाँ से पाय ॥

प्रज्ञाश्रमण मुनि

श्रीधर्मश्रुत शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ

१. बृहत्स्वयम्भूस्तोत्र–समन्तभन्द्राचार्य
२. श्रीसिद्धचक्र विधान–पं० सन्तलाल
३. सिरी भूवलय–कुमुदेन्दु आचार्य
४. बालगीत–संकलन रचयिता
५. बाल कथा संग्रह (आगम की कहानियाँ)
६. बाल विज्ञान— प्रथम भाग
७. बाल विज्ञान— द्वितीय भाग
८. बाल विज्ञान— तृतीय भाग
९. बाल विज्ञान— चतुर्थ भाग
१०. बाल विज्ञान— पञ्चम भाग
११. तत्त्वार्थसूत्र टीकाः अनुत्तर जिज्ञासा
१२. सरल उच्चारण संग्रह
१३. द्रव्य संग्रह
१४. चौबीस ठाणा
१५. रयणसार
१६. नाममाला (शब्दकोश)
१७. आसान उच्चारण पाठ संग्रह
१८. अनुपम पाठ संग्रह
१९. मन्दिर (हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, कन्नड़, गुजराती)
२०. तत्त्वार्थसार (भारतीय ज्ञानपीठ)
२१. कुरल काव्य (प्रभात प्रकाशन)
२२. गुरु शिष्य दर्पण
२३. धर्म परीक्षा
२४. सम्यक्त्व कौमुदी

२५. श्रेणिक चरित्र
२६. विक्रान्त कौरव
२७. दान चिन्तामणि
२८. दान शासन
२९. भक्तामर शतद्वी
३०. जैन बोधक (धर्म ध्वज विशेषांक, सन् १९५१)
३१. आँखिन देखी आत्मा (प्रवचन संकलन दश धर्म)
३२. अनुत्तर यात्रा (प्रवचन संकलन सोलह कारण)
३३. अन्तरङ्ग के रङ्ग (प्रवचन संकलन षट् लेश्या)
३४. त्रिकाल चौबीसी, कामदेव जिन बाहुबली पूजन
३५. बोलती माटी (महाकाव्य) नया संस्करण
३६. अभिषेक पाठ संग्रह (प्राचीन आचार्यों द्वारा रचित)

प्रकाशकाधीन

३७. चौंतीस स्थान दर्शन (सम्पादन) ,,
३८. अपना परिचय (प्रवचन संकलन बारह भावना) ,,
३९. अनर्घ्य अनुभव (कविता-गीत) ,,
४०. अपने-सपने (शायरी–ग़ज़लें) ,,
४१. कल्याण मन्दिर (पद्यानुवाद) ,,
४२. लघुतत्त्वस्फोट–अमृतचन्द्र आचार्य ,,
४३. रिष्टसमुच्चय–दुर्गदेव आचार्य ,,
४४. समवसरण पूजन विधान ,,
४५. समाधि मरणोत्सव दीपक ,,
४६. अथातो आत्म–जिज्ञासा (प्रकाशित)
४७. आचार्य शिरोमणि ,,